(मासिक)

# ज्ञानामृत

वर्ष 57, अंक 4, जुलाई, 2021
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

## परमात्मा और श्रेष्ठ कर्मों को अपना साथी बना लो तो जीवन खुशियों से भर जायेगा ...

**खरगोन-** मध्य प्रदेश के ऊर्जा मंत्री भ्राता हरदीप सिंह डांग को 150 पीपीई किट भेंट करती हुई ब्र.कु. देवकन्या बहन तथा ब्र.कु. मनीषा बहन। साथ में हैं सांसद भ्राता गजेंद्र सिंह पटेल तथा पुलिस अधीक्षक भ्राता शैलेंद्र सिंह।

**वाराणसी-** सारनाथ- ज्ञान-चर्चा के पश्चात् दैनिक जागरण, वाराणसी के जी. एम. डॉ. भ्राता अंकुर चड्ढ, ब्र.कु. सुरेंद्र बहन, ब्र.कु. दीपेंद्र भाई तथा ब्र.कु. बिपिन भाई समूह चित्र में।

**पानीपत (ज्ञानमान सरोवर)-** विधायक भ्राता प्रमोद विज, ऑक्सीजन कंसंट्रेटर मशीनें ब्र.कु. भ्राता भारत भूषण एवम् ब्र.कु. सोनिया बहन को सौंपते हुए।

**सांगारेड्डी-** कोरोना संक्रमित परिवार एवं मरीजों को भोजन खिलाने की सेवा करते हुए ब्रह्माकुमारीज की टीम जिसे जिला अधिकारी (कलेक्टर) एवं मरीजों ने खूब सराहा है।

**खिलचीपुर-** विधायक भ्राता प्रियवृत सिंह खींची को परमात्म संदेश देते हुए ब्र.कु. नीलम बहन।

**आगरा (अवधपुरी)-** ग्राम विकास अधिकारी बहन दीक्षा चौधरी को ईश्वरीय संदेश देने के बाद ब्र.कु. अश्विना बहन, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. सरिता बहन तथा ब्र.कु. सुभाष भाई उनके साथ।

संजय की कलम से.....

# प्रश्न-पत्र और परीक्षा परिणाम

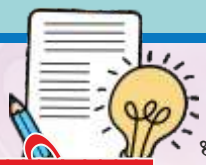

संसार में जिन विद्याओं का अध्ययन मनुष्य करता है, उनकी परीक्षा तो प्राय: सप्ताह, तीन मास, छ: मास या वर्ष के बाद ही हुआ करती है। वहाँ पढ़ने का समय अधिक परन्तु परीक्षा का समय तुलनाकृत कम होता है। किन्तु, ईश्वरीय पढ़ाई में परीक्षाओं का समय अधिक होता है। हम जब ज्ञान-कक्ष, योग-कक्ष, धारणा-कक्ष या सेवा-कक्ष में पढ़ या सीख रहे होते हैं उस समय भी हमारी परीक्षा साथ-साथ ही हो रही होती है। ज्ञान लेने के समय हम स्वयं को देह से न्यारे आत्मा मानकर बैठे हैं या नहीं, हम अपना शिक्षक एवं सद्गुरु परमपिता शिव ही को निश्चित किये हुए हैं या नहीं; योगाभ्यास के समय हम सभी प्रकार के संकल्पों-विकल्पों से दूर, आन्दातिरेक में हैं या नहीं हैं, हम पढ़ते समय घृणा, द्वेष, किन्हीं पहले के कटु अनुभवों या विकृत संस्कारों के प्रभाव में तो नहीं, हम सेवा के प्रति उत्साह, उमंग से भरपूर और आलस्य, अलबेलेपन इत्यादि से मुक्त हैं या नहीं – ये परीक्षाएँ हमारे पढ़ने और करने दोनों समय हो रही होती हैं। हमारी पढ़ाई प्रैक्टिकल है; हम ज्ञान को परिस्थितियों में कार्यान्वित करके ही परिपक्व अवस्था को प्राप्त करते हैं। जिनको पढ़ाई के समय परीक्षा का और परीक्षा के समय पढ़ाई का ध्यान नहीं रहता उनकी अवस्था में स्थिरता नहीं आती और बार-बार असफल होने की टेर पड़ जाती है।

दूसरी एक बात यह भी है कि हमारे सामने परिस्थितियों के रूप में जो नित्य नये प्रश्न-पत्र आते हैं, उनमें बहुत-सी परिस्थितियाँ ऐसी भी होती हैं जिनमें हम कमजोर होते हैं। वे परिस्थितियों रूपी प्रश्न, कमजोरियों की ओर हमारा ध्यान खिंचवाने तथा हमें उनमें सफलता प्राप्त करने का अवसर प्रदान करने के लिए आते हैं। प्रश्नों को हल करने से ही तो परीक्षा के परिणाम में किसी को कम और किसी को अधिक अंक मिला करते हैं। अत: हमें यह मानना चाहिये कि ये परिस्थितियों रूपी प्रश्न हमें सफलता का अवसर देने के लिए आये हैं। हमें दूसरों की कोई-न-कोई कमी बताने का बहाना बना कर उनमें फेल नहीं होना चाहिए बल्कि अपनी सफलता की ओर ध्यान देना चाहिए।

हमें यह भी समझना चाहिये कि हमारी परीक्षा एक क्षण में ही हो जाती है। किसी भी विषय, व्यक्ति, वस्तु, विषम स्थिति में हमें जैसा विचार आता है, उसी के अनुसार ही हमें अंक मिलने लग जाते हैं। हमारे मन में घृणा-द्वेष उत्पन्न होता है या सहानुभूति और करुणा, हमारे मन में उत्साह और उल्लास आता है या कटुता, रुक्षता एवं विषाद – इससे हम परखे जाते हैं और उसी रूप में हम प्रत्यक्ष भी होते हैं। अत: हमें चाहिये कि क्षण-क्षण अपने परीक्षा-पत्रों में पास (उत्तीर्ण) होते हुए हम शिव बाबा की प्रत्यक्षता के पात्र बनें। ■■■

## अमृत-सूची


- प्रश्न-पत्र और परीक्षा परिणाम 3
- राजयोग द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति (सम्पादकीय) 5
- दीदी मनमोहिनी - सबके दिलों पर राज करने वाली थी 7
- श्रद्धांजलि 8
- ईशू दादी जी की अविस्मरणीय यादें 9
- महाप्रयाण की तैयारी 10
- सत्य का सहज स्वीकार 12
- ज्ञानामृत की कमाल (कविता) 14
- क्या आत्महत्या समस्या का समाधान है? 15
- जेल में मिला अनूठा ज्ञान 18
- ईशू दादी जी ईमानदारी-वफादारी की साक्षात् देवी थी 19
- ईश्वरीय प्रेम की अग्नि परीक्षा 21
- गंभीरता की देवी ईशू दादी जी 24
- सचित्र सेवा-समाचार 27
- दुआओं का खजाना 28
- सहन करो, शील बढ़ाओ 29
- रावण की बेटी चिन्ता 30
- एक पत्र, पुत्र के नाम 33
- प्रश्न-उत्तर 34

सम्पादकीय

# राजयोग द्वारा सिद्धियों की प्राप्ति

**'योग'** अक्षर ढाई अक्षरों का बना है परन्तु इसका सही अभ्यास करने से मनुष्य को ढाई हजार वर्षों के लिए सर्वांगीण, सम्पूर्ण और स्थाई सुख एवम् शान्ति की प्राप्ति होती है। यह कहना अयुक्त न होगा कि योग ही मात्र ऐसा पुरुषार्थ है जिस द्वारा मनुष्य को सर्व सिद्धियाँ और सर्व निधियाँ प्राप्त होती हैं। योग चाबियों का एक ऐसा गुच्छा है जिस द्वारा सभी खजानों के द्वार और सभी शक्तियों के भंडार मनुष्य के लिए सहज ही खुल जाते हैं। योग-स्थित आत्माओं के संकल्प बड़े शक्तिशाली, अचूक और कल्याणकारी होते हैं। उनके सामने प्रकृति की शक्तियाँ नतमस्तक होती हैं।

प्रश्न उठ सकता है कि योग द्वारा सब सिद्धियाँ कैसे प्राप्त होती हैं। इसको जानने के लिए यह मालूम होना चाहिए कि योग रूपी पुरुषार्थ में अनेक प्रकार के सूक्ष्म और स्थूल पुरुषार्थ समाये होते हैं और उनमें से हरेक पुरुषार्थ किसी-न-किसी प्रकार की सिद्धि को देने वाला होता है। यह प्राय: सर्वविदित है कि योगी को (1) सत्य (2) अहिंसा (3) ब्रह्मचर्य (4) अपरिग्रह अथवा अनासक्ति और (5) शुद्धि अथवा शुचि आदि का पालन करना पड़ता है। इनके अतिरिक्त वह देह से न्यारा होता है, परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ता है, मन को सब ओर से हटाकर, इस संसार से भी निकाल कर एक परमात्मा ही पर टिकाता है तथा सबके कल्याण की बात सोचते हुए सेवा में रहता है। अब हम नीचे यह बतायेंगे कि किस पुरुषार्थ से क्या सिद्धि होती है –

### सत्य

जो बात अथवा वस्तु हो, उसके बारे में कहना कि वह 'है ही नहीं' अथवा जो गलती, भूल अथवा घटना हुई हो, उसके बारे में कहना कि वह 'हुई नहीं' असत्य है। इस प्रकार जो घटना न घटी हो अथवा जो बात या चीज हो ही न, उसके बारे में कहना कि 'वह है' यह भी असत्य है। इस प्रकार का असत्य कथन मनुष्य प्राय: भय अथवा स्वार्थ के वश ही किया करता है। अत: सत्य बोलने से मनुष्य को अभय एवं अचल अवस्था की तथा अपने वचन के सत्य की सिद्धि की प्राप्ति होती है अर्थात् उसके बोल वरदान रूप सिद्ध होते हैं। अत: जब हम पारमार्थिक और व्यवहारिक सत्य बोलते हैं तो हम 'वरदान मूर्त' बनते हैं। 'मैं आत्मा हूँ, देह नहीं; परमात्मा परमधाम का वासी है, सर्वव्यापक नहीं' – अध्यात्म सम्बन्धी ऐसे सत्य बोलना पारमार्थिक सत्य कहलाता है और व्यवहार में जो बात जैसी हो, उसे निश्छल रूप से सरलतापूर्वक वैसे ही कहना व्यवहारिक सत्य है। इन दोनों प्रकार के सत्यों से मनुष्य की अवस्था सतोप्रधान होने लगती है, वह सत्य स्वरूप परमात्मा को अधिकाधिक निकटता से जानता है, वह सतयुग के देवताओं-तुल्य अवस्था प्राप्त करने लगता है और उसके वचन सत्य सिद्ध होने लगते हैं। आज इस कलिकाल में असत्यता का ही प्रचलन है; अत: सत्य बोलने वाले को बहुत कष्ट सहन करने पड़ते हैं, यहाँ तक कि उसका जीना ही मुश्किल हो जाता है। फिर, ऐसे भी अवसर आते हैं जब सत्य बोलने पर किसी दूसरे के परमार्थ में भी विघ्न पड़ सकता है, यहाँ तक कि किसी की जान भी जा सकती है। अत: कई बार सत्य के पथ पर जाने वाले के लिए संघर्ष उत्पन्न होता है। परन्तु मनुष्य को इस बात का सतत प्रयत्न करना चाहिए कि वह सत्य को ही ग्रहण करे, सत्यता ही को व्यवहार में लाये और जब तक कि किसी के पारमार्थिक कल्याण की अथवा किसी के जीवित रहने की विषम परिस्थिति उपस्थित न हो, सत्य ही बोले। इससे ही सत्य की प्रत्यक्षता होगी, सतयुग आएगा,

सतोगुण प्रधान होगा और जो कहेंगे, वह हो जाएगा।

### अहिंसा

शत्रुता, घृणा, द्वेष, स्वार्थ और क्रोध के वशीभूत होकर किसी प्राणी के प्राण हरना अथवा किसी अन्य जीव का घात करना तथा स्वयं को या अन्य किसी को कष्ट, दुख एवं अशान्ति पहुँचाना न्यूनाधिक हिंसा करना है। अत: इनको छोड़कर प्रेम, स्नेह, सौहार्द, सहानुभूति, सद्भावना, सह-अस्तित्व और सर्व-उत्कर्ष के भाव में जो स्थित होता है उसे भी इसके फलस्वरूप दूसरों का स्नेह, सद्भाव, सामीप्य, सद्भावना इत्यादि की प्राप्ति होती है। जो काम द्वारा कुठाराघात, क्रोध द्वारा दाह, लोभ द्वारा लूट आदि कर्मों में पड़कर दूसरे का अकल्याण करना छोड़ देता है, वही सबका स्नेहभागी बनता है, सबके मन को जीतता है अथवा उनकी इच्छा से उन पर शासन करता है। ऐसी अहिंसा के बल से ही सुख-शान्ति से पूर्ण, शत्रुरहित, आक्रमण रहित, दुखरहित स्वराज्य की प्राप्ति होती है। ऐसी अहिंसा से ही मनुष्य देवता बनता है, देवयुग की स्थापना के कार्य में सफल होता है और दैवी स्वराज्य का अधिकारी बनता है। इसी से ही सभी जीव-प्राणी उसे प्यार देने और उसका प्यार पाने को उत्सुक रहते हैं क्योंकि उसका प्यार नि:स्वार्थ और कल्याणमय होता है। हम मन, वचन, कर्म से जितना-जितना इस प्रकार की अहिंसा का पालन करेंगे, उतना-उतना हम मन-पसन्द और लोक-पसन्द बनेंगे और इसी के आधार पर हम भविष्य का अटल, अखण्ड, निर्विघ्न और अति सुखकारी स्वराज्य प्राप्त करेंगे।

### ब्रह्मचर्य

शारीरिक सौन्दर्य के आकर्षण का, रूप और लावण्य का, कोमलता और कामुकता का दास न बनना ही ब्रह्मचर्य का पालन करना है। यौवन में भी, एक शिशु के समान मन के निर्दोष रहने और दृष्टि एवं वृत्ति के शुद्ध करने ही को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। गृहस्थ को भी जो आश्रम के समान बनाकर इस अपवित्र संसार रूपी कीचड़ में कमल के समान रहता है, वही ब्रह्मचारी है। जो अपने तथा अन्य किसी के देह पर आसक्त नहीं है बल्कि स्वयं को ब्रह्मधाम से आया हुआ एक आत्मा मान कर सारी चर्या करता है, वही मानो ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है। इस प्रकार के आचरण से अपनी शक्ति का संचय करते हुए जो अपनी तथा अन्य आत्माओं की उन्नति में लगा रहता है, वह ही उत्तम ब्रह्मचारी है। मन में निर्दोष होने के कारण उसकी मासूमियत दूसरों को प्रभावित करती है। रूप, लावण्य के आकर्षण को जीतने के परिणाम-स्वरूप वह आत्मा स्वरूप में स्थित होता है, ईश्वरीय लव में लीन रहता है और ब्रह्मलोक से आया हुआ मानकर विचरने के प्रभाव स्वरूप लोगों को उसकी निकटता में ब्रह्मलोक की शान्ति, एकान्त और प्रकाश का अनुभव होता है। इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के फलस्वरूप कर्मेन्द्रियाँ उसकी दासी हो जाती हैं और उसे स्थाई स्वास्थ्य तथा सात्विक सुख की प्राप्ति होती है। शक्ति का संगठन करने के कारण वह इतना शक्तिशाली हो जाता है कि मृत्यु को भी जीतकर अमर देवता बन जाता है। उसका शैशव और यौवन चिरस्थायी रहता है तथा उसे बुढ़ापा और व्याधि अपने अधीन नहीं कर सकते। अत: हमें मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य का ही पालन करना चाहिए क्योंकि इस द्वारा ही सतयुगी दैवी सृष्टि की अथवा अमरलोक की एवं जीतेन्द्रिय देवताओं की रूप-लावण्य, स्वास्थ्य-सुख, सम्पदा और सदा बहार वाली दुनिया की स्थापना हो सकती है और हम उसमें जाने के अधिकारी बन सकते हैं। यहाँ ब्रह्मचर्य का पालन करने से ही हमारे लिए ब्रह्मलोक के द्वार खुल सकते हैं। इन्द्रियों को जीतने से अथवा इन्द्रियों से परे स्थिति होने से ही हम इन्द्रप्रस्थ के मालिक बन सकते हैं।

### अनासक्ति अथवा अपरिग्रह

किसी भी पदार्थ, वस्तु अथवा व्यक्ति में लगाव न होना, उस पर आश्रित अथवा आधारित न होना, उसके न होने पर आकुल-व्याकुल न होना तथा स्वप्न और स्मृति मात्र में भी उसके प्रति खिंचाव अथवा उसके लिए तृष्णा अनुभव न करना ही अनासक्ति है। ऐसी

अनासक्ति वाला ही उपराम चित्त होता है। उसमें घृणा नहीं होती बल्कि समझ और सूझ के आधार पर उसमें ममत्व या आकुलता नहीं होती। इस प्रकार अनासक्त हो, इधर-उधर सब ओर से लगाव मिटाने वाले का मन ही, जहाँ वह लगाना चाहे, लग सकता है अर्थात् अनेक ओर से हटाने के कारण उसे एकाग्रता प्राप्त होती है। संसार के अस्थिर पदार्थों में आकुल न होने वाले को ही मन की स्थिरता और उच्च कुल मिलता है। आकर्षणों को जीतने से ही उसके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय आकर्षण आता है अर्थात् वह आकर्षणमूर्त बनता है। अनेक प्रकार के रसों की तृष्णा को जीतने से ही सब प्रकार के रसों की स्वत: ही प्राप्ति होती है और जीवन नीरस की बजाय सरस बनता है अर्थात् मनुष्य ईश्वरीय स्मृति द्वारा आनन्द रस प्राप्त करता है। मेरा-मेरा मिटाने से ही सब-कुछ मेरा हो जाता है और हर व्यक्ति मेरा ही बनना चाहता है। ममत्व को छोड़ने से ही सर्वस्व की प्राप्ति होती है। स्मृति द्वारा भी सब प्रकार की आसक्ति को भूलने से आत्मा की याद टिक सकती है। चीजों को छोड़ने से ही मन में हल्कापन और वृत्ति में विराम आता है। अत: हमें अनासक्ति और अपरिग्रह को पूर्ण रूप से धारण करना चाहिए क्योंकि यही प्रकृति को दासी बनाने का दिव्य उपाय है। अनासक्ति वाले को कुछ भी अप्राप्त नहीं रहता और वह अशान्ति, अकिंचन-भाव और अधीनता से ऊपर उठ जाता है। इस संसार के पदार्थों में अनासक्त होने वाले को सहज ही स्वर्ग की सर्व सम्पदा प्राप्त होती है और यहाँ भी सम्पत्ति और सिद्धि उसके अंग-संग रहना चाहती हैं।

### शुचि अथवा शुद्धि

जल के स्नान द्वारा शरीर की, दैवी गुणों की धारणा द्वारा मन की, ज्ञान द्वारा बुद्धि की और योग द्वारा संस्कारों की शुद्धि होती है। सत्संग द्वारा विचार की और श्रेष्ठ लक्ष्य द्वारा मनुष्य के लक्षणों में शुचि आती है। तन की शुद्धि से तन्दुरुस्ती, मन की शुद्धि से मन-मौज, बुद्धि की शुद्धि से ध्रुव स्मृति और संस्कारों की शुद्धि से सात्विकता प्राप्त होती है। इन सबकी शुद्धि से अतीन्द्रिय सुख का अपार खजाना मिलता है। वचन और कर्मों की शुद्धि, संकल्प की शुद्धि पर आधारित है। संकल्प की शुद्धि शुद्ध अन्न, शुद्ध संस्कार, शुद्ध अध्ययन इत्यादि पर आश्रित है और जैसे कि पहले बताया गया है कि आहार, व्यवहार, विचार और संस्कार के शुद्धिकरण के लिए योग जरूरी है। शुद्ध होने से योग लगता है और योग लगने से शुद्धि आती है और इन दोनों से आत्मबल, उत्साह, उमंग और खुशी का इतना खजाना मिलता है कि मनुष्य इन द्वारा संसार का हर कार्य कर सकता है। अत: मनुष्य को सब प्रकार से शुद्धि का पालन करना चाहिए क्योंकि शुद्धि अथवा पवित्रता द्वारा ही परमपवित्र परमात्मा का सामीप्य प्राप्त होता है, परलोक गमन होता है, पवित्र सतयुगी सृष्टि में पवित्र जीवन और पवित्र स्वराज्य पद की प्राप्ति होती है। पवित्रता ही मनुष्य को महान बनाती है और उसे सब सुखों की अधिकाधिक प्राप्ति कराती है जबकि शारीरिक अपवित्रता – रोग, मानसिक अपवित्रता, अशान्ति एवं चंचलता, बौद्धिक अपवित्रता, प्रभु से वैपरीत्य भाव पैदा कर, हर प्रकार के कष्ट एवं क्लेश का कारण बनती है। ■■■

**ज्ञान के उद्देश्य और महत्व की पहचान के बिना कोई भी विद्वान उस ज्ञान की पुस्तक की तरह है जिसमें ज्ञान की सारी सामग्री है लेकिन वह खुद उसका प्रयोग नहीं कर सकती। हाँ, उसे पढ़ने वाला जरूर उससे लाभ ले सकता है।**

28 जुलाई पुण्यतिथि पर विशेष....

# दीदी मनमोहिनी
## सबके दिलों पर राज करने वाली थी

ब्रह्माकुमार सूर्य भाई, आबू पर्वत

दीदी मनमोहिनी महान तो थी ही परन्तु शक्तिशाली भी बहुत थी। उन पर भगवान की नजर सन् 1936 में ही पड़ गई थी। उनको स्वयं भगवान ने संवारा था, अपनी शक्तियाँ प्रदान की थी, वरदान दिये थे। दीदी बहुत साहूकार घर से थी, सब कुछ छोड़कर इस महान यज्ञ को सफल बनाने में सम्मिलित हो गई थी। बाबा की दृष्टि उन पर पड़ी और एक सेकण्ड में बाबा ने उनको पहचान लिया। उनका नाम गोपी था। बाबा ने कहा, तुम सच्ची गोपी हो और सचमुच वे आते ही प्रभु-प्रेम में मगन हो गई। उन्हें लगा, जिसकी तलाश थी, जिसे ढूँढ़ रही थी, ये वही निराकार परमपिता हैं, जिसे हम शिवबाबा कहते हैं, बस, अपना सब कुछ समर्पित कर दिया।

### बहुत अच्छी योगिन थी

दिल्ली में बहुत समय रही। पंजाब, यू.पी., बिहार और अन्य स्थानों पर सेवा करते हुए, मम्मा के देह-त्याग (1965) के बाद बाबा ने उन्हें माउण्ट आबू बुलाया। चूँकि यहाँ बहुत कार्य चलता था तो किसी कन्ट्रोलर की जरूरत थी। वे यहाँ आ गई और सारा कार्य सुचारु रूप से संचालित करने लगी। बहुत अच्छी योगिन थी। चेहरे पर तेज, मधुरभाषिणी, सबको अपनापन और प्यार देने वाली, जल्दी ही उन्होंने सबके दिलों पर राज कर लिया और बाबा जब अव्यक्त हुए तो अपने इस महान कार्य की जिम्मेवारी दादी प्रकाशमणि के साथ उन्हें भी सौंप दी। दोनों मिलकर सारे यज्ञ का संचालन करने लगे। मैंने उन्हें बहुत समीपता से देखा। उन्होंने बहुतों को समर्पित कराया। कन्याओं को तो इतना अपनापन देती थी कि कहती थी, तुम मेरी सखी हो, आओ, भगवान के कार्य में लग जाओ। संसार की राहों पर तो सभी चल रहे हैं, तुम ईश्वरीय राहों पर आ जाओ।

### तुरन्त यथार्थ निर्णय

मेरा भी सन् 1968 में दिल्ली में उनसे मिलना हुआ। साकार बाबा से मेरी मुलाकात कराकर, समर्पित होने की अर्जी उन्होंने ही बाबा के सामने रखी। उनके माध्यम से मैं समर्पित हुआ। मुझे बहुत खुशी हुई। वे मुझे सदैव अपना मानती थी। हर चीज सिखाती थी। मैं कोई गलती करता था तो शिक्षा देती थी। बहुत प्यार था उनका मुझसे। कहीं मेरी महिमा होती थी तो उनका भी माथा गर्व से ऊँचा हो जाता था। वे अनेक खूबियों से सम्पन्न थी। कुशल प्रशासन के लिए तुरन्त यथार्थ निर्णय, यह उनकी सबसे पहली खूबी थी। मैं छोटा था किन्तु मुझे पता चलता था कि दीदी ने किस तरह एक सेकण्ड में परफेक्ट निर्णय ले लिया, दोनों पक्ष सन्तुष्ट हो गए, किसी को नाराजगी भी नहीं हुई। दीदी बहुत शक्तिशाली थी। जब ऐसे केस होते थे तो बहुत दृढ़ता दिखाती थी। ऐसे नहीं कि जिसने गलती की उस पर रहम करे या उसको ऐसे ही चला दे, नहीं। उसको ठीक से समझा कर, प्यार भी देती थी और आगे भी बढ़ाती थी। उसकी कमियों को निकालती थी।

### सदा योगयुक्त

लोग सदा उन्हें योगयुक्त देखते थे। रोज सवेरे उठकर बहुत सुन्दर ढंग से प्रभु मिलन करती थी। विशेष रूप से कन्याएँ जब यज्ञ में आने लगी तो उनको समर्पण कराने का एक मुख्य कार्य उनके जिम्मे आ गया। यज्ञ को आगे बढ़ाना था तो बहुत सारी टीचर्स की जरूरत थी। उन्हें बहुत अपनापन देती थी, उन्हें सखी सम्बोधित करके

कहती थी, तुम हमारे हो, कोई भी दिक्कत हो तो हम तुम्हारे लिए बैठे हैं, सदा ही खाली हैं, कुछ भी जरूरत पड़े, तुम हमारे पास आ जाना। भाई और बहनें भी, बहुत ही लगन के साथ, आत्मविश्वास के साथ अपने जीवन को इस महान कार्य में सफल कर देते थे। यात्राओं पर भी जाती थी। भिन्न-भिन्न जो हमारे सेवाकेन्द्र थे, वहाँ वे जाती थी। बहुत अच्छी स्थिति थी उनकी। आने वाले सभी विद्यार्थियों पर उनका असर पड़ता था। अव्यक्त बापदादा जब भी आते थे, पार्टियों से मिलने से पहले और ईश्वरीय महावाक्यों के अन्त में दीदी ही बाबा के सम्मुख होती थी। उस समय बाबा के जो गुह्य राज खुले वो सचमुच मेरे लिए बड़ी रोशनी बन गए। अनेक गुह्य बातें मुझे समझ में आ गई जिनमें से अनेक बातें मुझे याद रहती हैं। सपनों के बारे में बाबा ने बहुत अच्छे-से स्पष्ट किया। प्रभु प्लैनिंग क्या है इस युग को बदलने की, यह बहुत अच्छी तरह स्पष्ट किया। बाबा से उनकी ऐसी मुलाकात हर बार होती थी। उनका गहरा प्रभाव मेरे ऊपर पड़ा और मैं समझने लगा कि ये आत्मा केवल महान आत्मा नहीं, महान आत्माओं में भी महान है जिसको देखकर भगवान भी गुह्य रहस्य स्पष्ट कर देते हैं।

### बाबा के अति समीप थी वे

एक बार दीदी गिर गई, चोट लग गई लेकिन बहुत अच्छी स्थिति बनाकर रखी, सदैव मुस्कराती रही। बाबा के कार्य में सदा संलग्न रही। बाबा के इस महान कार्य को सम्पन्न करते हुए सन् 1983, 28 जुलाई को उन्होंने अपने देह का त्याग किया। वे शिव बाबा से बातें करती, ब्रह्मा बाबा से बातें करती कि वतन में रहकर जिस आनन्द का अनुभव आप कर रहे हैं, मुझे भी उस आनन्द का अनुभव कराओ। ऑपरेशन के लिए वे मुम्बई में गई थी, एक मास कोमा में चली गई। हम सोचते रहे, ये क्या, ऐसी महान आत्मा कोमा में! हम उन्हें जगाने का भरसक प्रयास करते। उनके देह-त्याग के बाद बाबा का बड़ा सुन्दर संदेश आया कि दीदी की बहुत इच्छा थी कि मुझे सूक्ष्मवतन के परम आनन्द के अनुभव चाहिएँ। तो बाबा ने उनको एक मास वतन में रखा। उनको भिन्न-भिन्न तरह के अनुभव करवाये, विश्व की परिक्रमा लगवाई, सबको सकाश दिलवाई। ऐसी थी ये महान आत्मा जिसकी समीपता का हमने बहुत लाभ लिया। आज हम उनको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं और शत-शत नमन करते हैं। ■■■

## श्रद्धांजलि

परमप्रिय अव्यक्त बापदादा के श्रेष्ठ नूरे रत्न दैवी भ्राता सुंदरलाल जी ने 17-5-2021 को दिन में साढ़े तीन (3.30) बजे अपना पुराना चोला त्याग कर, 93 वर्ष की उम्र में बापदादा की गोद ली।

उनका लौकिक जन्म सन् 1928 में हुआ था। परम आदरणीय दैवी भ्राता जगदीश जी के वे क्लासमेट और जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में उनके होस्टल रूममेट थे। जगदीश भाई जी ही उन्हें बाबा के ज्ञान में लाने के निमित बने थे। सन् 1954 में दिल्ली, कमला नगर सेंटर में उन्होंने क्लास और सेवा आरंभ की थी। काफ़ी समय वे स्कूल प्राचार्य रहे। दिल्ली प्रशासन के अंतर्गत शिक्षा अधिकारी के पद पर रहते हुए वे सेवानिवृत्त हुए। दिल्ली, पटेल नगर और हरी नगर सेंटर में रहते हुए वे अंत तक विषेश तौर पर मीडिया सेवाओं के निमित्त थे। ब्रह्मा बाबा से सलाह के बाद, उन्होंने ब्रह्माकुमारी शुक्ला दीदी जी से गंधर्व विवाह किया था और मिलकर ही सेवा की। दिल्ली और दिल्ली के आसपास के लगभग 110 सेवाकेन्द्रों की स्थापना और संचालन में सक्रिय सहभागी बने रहे।

हम सभी भाई-बहनें प्राण प्यारे बाबा की स्मृति में रहकर उस महान आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पण कर रहे हैं।

# ईशू दादी जी की अविस्मरणीय यादें

ब्रह्माकुमारी कविता, शांतिवन

ईशू दादी जी का लौकिक परिवार धन-धान्य से संपन्न था। दादी जी के संस्कार वैसे ही रॉयल और शांतचित्त के रहे। दादी जी का जीवन गंभीरता, सरलता, सादगी से परिपूर्ण था। दादी जी ईमानदार और वफादार होकर रही। दादी जी का दिव्य चरित्र बाबा के सम्मुख स्पष्ट था। दादी जी में समाने की शक्ति बहुत थी, तभी बाबा हर बात दादी जी को बताते थे। यज्ञ की हर छोटी-बड़ी बातें दादी जी को पता रहती थीं। जब बाबा के पास समाचार आते थे, जिन्हें पोतामेल कहते हैं, वे दादी जी बाबा को पढ़कर सुनाती थी। बाबा थोड़ा-सा सुनकर ही दादी जी को कहते थे, इसको फाड़ दो, यह समाचार सच्चाई से नहीं भेजा गया है, ऐसे बाबा परख लेते थे और दादी जी को भी ऐसे परख कर पत्र-व्यवहार करने की दिव्य प्रेरणा मिली हुई थी।

### दादी जी आज्ञाकारी बन कर रही

आप सभी मधुबन (पांडव भवन) के बाबा के कमरे को जानते ही हैं, उसके पीछे ही दादी जी का कमरा है। दादी जी को जब भी बुलाना होता तो बाबा एक ताली बजाते, दादी जी तुरंत ही पहुंच जाती। वैसे तो सारा ही समय बाबा के साथ ही रहती थी लेकिन यदि कभी किसी कारणवश रूम में जाती और बाबा आंगन में खड़े हाते तो एक सिटी बजाते और दादी जी तुरंत ही आ जाती। दादी जी सदा बाबा की राइटहैंड बन कर रही।

### बाबा ने दादी जी को घड़ी दी

यज्ञ में, शुरुआत के समय में एक दिन बाबा सभी ब्रह्मावत्सों के साथ बैठे थे, तब बाबा ने कहा, किसी के पास कोई भी कीमती आभूषण है तो उसे मम्मा-बाबा के पास जमा कर दो क्योंकि कीमती आभूषण रखा होगा तो उसमें बुद्धि जाएगी और एकाग्रचित्त अवस्था नहीं बन सकेगी। उसी समय सभी ने अपने-अपने आभूषण निकाल मम्मा-बाबा को समर्पित कर दिए। उनमें से बाबा ने एक घड़ी उठाई और वह दादी जी को दी। बाबा, दादी जी को सदा ही अपने अंग-संग रखते और दादी जी से समय पूछा करते थे। इसके अलावा दादी जी को पत्र-व्यवहार की सेवा और डाक द्वारा मुरलियों को पहुंचाने की सेवा समय से करनी होती थी। दादी जी को दी गई घड़ी, दादी जी के हाथ की नस पर चलती थी, इसमें बैटरी का खर्चा नहीं होता था इसलिए दादी जी को यह प्रिय लगती थी, इसमें भी दादी जी की इकॉनमी थी। दादी जी के पास बहुत ही कीमती घड़ियां एक से बढ़कर एक आई पर दादी जी को बाबा की दी हुई यही घड़ी सबसे प्रिय लगती थी। इसके सामने लाखों की घड़ियां भी दादी जी के लिए तुच्छ थीं। आज भी उस घड़ी को हम देख सकते हैं, जो बाबा द्वारा दादी जी को दिया गया विशेष उपहार है।

### बाबा का दादी से प्यार, दादी का बाबा से प्यार

दादी जी का बाबा से अटूट प्यार था। बाबा, दादी जी को अपने पास ही रखते थे, बाहर सेवाओं में नहीं भेजते थे। बाबा ने आदि से अंत तक के लिए मधुबन में ईशू दादी को ही मुकर्रर किया। एक बार सारी दादियाँ बाबा से कहने लगीं, आप हमें बाहर भेजते, ईशू बहन को भी बाहर सेवाओं में भेजो। तब बाबा ने एक बार ईशू दादी जी को छुट्टी दी और कहा, बच्ची को ले जाओ। तब दादी जी लखनऊ सेवा में गई थी। दादी जी बाबा की याद में मगन होकर गीत गुनगुनाती थी, 'तेरे बिन मेरा दिल ना लागे बाबा।' यही गीत गाते हुए दादी जी गहरी याद में खो जाती थी। तब बाबा ने विश्वकिशोर भाई जी को भेजकर दादी जी को दूसरे ही दिन मधुबन बुला लिया, उसके बाद बाबा ने कभी भी दादी जी को बाहर नहीं भेजा। इतना दादी जी का और बाबा का अटूट प्यार रहा। दादी जी ने अपने जीवन के 85 वर्ष मधुबन यज्ञ में संपूर्ण रूप से त्याग, तपस्या और सेवा में व्यतीत किए। ■■■

# महाप्रयाण की तैयारी

ब्रह्माकुमार चन्द्रवदन चोक्सी, नडियाद

किसी कवि की एक सुन्दर पंक्ति याद आती है, 'हम हैं मुसाफिर, अलख लोक के।' जो लोक हमने देखा नहीं है, अलख है, अदृश्य है, अब वहाँ जाना है। सामान्य मनुष्य भी कहते हैं, 'जहाँ से आए हैं वहाँ वापस जाना है' लेकिन उन्हें मालूम नहीं है कि कहाँ से आए हैं और कहाँ जाना है? इस धरती पर हम मुसाफिर हैं। जिस प्रकार रेलगाड़ी के मुसाफिर को अपना स्टेशन आने पर उतर जाना पड़ता है उसी प्रकार हमारी यात्रा भी अब पूरी होने को है और अब हमें भी जीवन रूपी गाड़ी से उतरना है। किस क्षण यह जगत छोड़ना पड़ेगा, इसकी पूर्व जानकारी किसी को नहीं होती। हरेक को यही लगता है कि मेरे जाने के लिए अभी और वक्त है।

### संसार में आश्चर्यजनक बात कौन-सी है?

महाभारत में वर्णित यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष पूछता है, 'इस संसार में कौन-सी बात आश्चर्यकारक है?' युधिष्ठिर उत्तर देते हैं, 'मृत व्यक्ति की अर्थी लेकर जाने वाले लोगों को प्रतिदिन देखते हुए भी सभी मनुष्य यही समझ कर चलते हैं कि मुझे तो जल्दी जाना नहीं है।' अज्ञान निद्रा में सोए हुए मनुष्य अन्तिम घड़ी तक संसार के रस-भोग में ही रत रहते हैं । इसी कारण उन्हें अन्तिम महायात्रा की पूर्व-तैयारी करने की सूझबूझ तक नहीं होती। साथ में क्या ले जायेंगे, इसका ज्ञान न होने के कारण जिन्दगी भर इन्द्रिय सुखों, स्वजनों के मोह तथा धन-साधनों के संग्रह में ही रचे-पचे रह कर अपना अनमोल जीवन बर्बाद कर देते हैं। सारी जिन्दगी जिस की तवज्जो के साथ संभाल की उस देह का, देह के सम्बन्धों का और धन-संपत्ति का त्याग करते वक्त हृदय विदीर्ण होता है। उन्हें संसार छोड़ना अच्छा नहीं लगता और मृत्यु उन्हें छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती। ऐसी दयनीय दशा में, दुखी होते-होते, जबरदस्ती विदा होते हैं। सन्त कबीर दास की दो पंक्तियाँ याद आ रही हैं,

'इस तन धन की कौन बड़ाई, देखत पल में मिट्टी मिलाई।
देह जले रे जैसे लकड़े की मौली, बाल जले रे जैसे घास की पूली।'

अर्थात् इस नश्वर शरीर की क्या बड़ाई करूं, क्या गर्व करूँ? पलभर में ही राख बनकर मिट्टी में मिल जाना है। लकड़ी की गठरी की तरह यह देह और घास की पूली की तरह बाल जल जायेंगे।

### मृत्यु का ज्ञान

जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु अनिवार्य है। जिसका उदय होता है वह अस्त भी होता है। जैसे बीज में से वृक्ष उगता है, उसी प्रकार, बीज रूपी आत्मा से देह रूपी वृक्ष की उत्पत्ति होती है। देह रूपी वृक्ष के मृत्यु के अधीन होने के बाद बीजरूप आत्मा पुनर्जन्म धारण करती है। जन्म, जीवन और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म, इस प्रकार यह चक्र निरंतर चलता ही रहता है। देह का विनाश होता है और आत्मा अविनाशी-अमर है।

### जीवन में सुख और दुःख का कारण क्या है?

सुख हमारे सत्कर्मों का फल है और दुःख हमारे दुष्कर्मों का फल है। ईश्वर कभी किसी को भी सजा नहीं देता। हमारे कर्म ही हमें सताते हैं। सत्कर्म जमा किए होंगे तो जीव सुखपूर्वक विदाई लेगा। खोटे कर्म किए होंगे तो अन्तिम विदाई बहुत कष्टदायक बन जायेगी। दूसरा जन्म भी दुःखदायक बन जायेगा। संसार में चारों ओर नजर घुमाकर देखो, सत्कर्म और दुष्कर्म के फल पाने वाले हजारों मनुष्य दिखाई देंगे। मृत्यु, जीवन का अनिवार्य और सनातन सत्य है, इस बात को सहज स्वीकार करें। मृत्यु विषयक समझ पाने का प्रयास करें। मृत्यु हमें शरीर

की अनेकानेक व्याधियों से छुड़ाकर नया देह, नये सम्बन्ध और नया जीवन प्रदान करती है इसलिए हमें मृत्यु को अपना अंतरंग मित्र समझना चाहिए। मृत्यु हमें पुराने, जर्जरित जीवन के स्वभाव-संस्कार, सम्बन्ध तथा भूतकाल की अनेक दुष्कल्पनाओं से मुक्त होने का मौका प्रदान करती है। उसका सस्नेह स्वागत करें।

पूर्वकाल में जब ट्रेन, बस, विमान आदि की खोज नहीं हुई थी तब भक्तजन अमरनाथ, बद्रीनाथ आदि तीर्थों की यात्रा पर जाने के दिनों से बहुत पहले ही तैयारी शुरू कर देते थे। उस काल में ये यात्राएं पैदल ही की जातीं थीं। वे अपने घरवालों से कह कर जाते थे कि वापस आए तो ठीक अन्यथा हमारे नाम का अन्तिम स्नान कर लेना। अपना धंधा, घर-सम्पत्ति, सब कुछ सौंपकर, निश्चिंत होकर जाते थे। साथ में आवश्यक सामान ही रखते थे। उसी प्रकार अब संगमयुग की समाप्ति के दौर में हम सब मनुष्यों को महाप्रयाण के पहले कौनसी तैयारी करनी चाहिए, आइये विचार करें–

### देह से ममत्व का त्याग

सबसे पहले तो जिस देह के साथ हम जीवनभर रहे, उससे ममत्व का त्याग। देह से लगी हुई इन्द्रियों के रसभोग का त्याग। देह को आत्मा का वस्त्र समझकर उसकी चिन्ता से मुक्त होने का अभ्यास करें अर्थात् न्यारे हो जायें।

### संग्रहवृत्ति से दूरी

धन-सम्पत्ति और साधनों का संग्रह आज तक करते ही रहे। अब मन को उस संग्रहवृत्ति से दूर करना है क्योंकि ये सब साथ में नहीं जायेंगे। जीवन का लक्ष्य नजरों के सामने रख कर वैराग्यवृत्ति पैदा करें। मेरा-मेरा का जो विस्तार है उसे मन से समेट लें। वैराग्य की उत्पत्ति ज्ञान के मनन-चिन्तन से होती है। राजकुमार सिद्धार्थ ने रोगी, वृद्ध और मृत व्यक्ति को देखा और उनके हृदय को एक धक्का लगा कि यही दशा पत्नी यशोधरा की, पुत्र राहुल की और मेरी भी होगी। रातभर के चिन्तन के बाद उन्होंने संसार का त्याग किया। शिवबाबा कहते हैं, आपको तो बेहद का त्याग करना है, संसार में रहते हुए ही संसार से परे अर्थात् मेरेपन से मुक्त होने का अभ्यास करना है। इसी पुरुषार्थ को बाबा कमलपुष्प समान अथवा कमलवत् जीवन कहते हैं अर्थात् संसार रूपी सरोवर के कीचड़ में से जन्म लेने के बावजूद जीवन बेदाग हो। यही स्थिति भगवद्गीता में साक्षीदृष्टि या उपराम अवस्था के रूप में पहचानी गई है। संसार तो मन में रचा जाता है। उसे मन में से ही विदा करना, यही है तीव्र पुरुषार्थ की तैयारी इसकी विधि सरल है - स्वयं की आत्मिक स्थिति द्वारा प्रभु पिता की स्मृति में लीन हो जाना।

### देह के हिसाब-किताब चुक्ता करने की तैयारी

किये हुए कर्मों के फलस्वरूप होने वाले रोग की पीड़ा-वेदना शरीर के माध्यम से आत्मा को भुगतनी ही पड़ती है। अब यह हमारे पर निर्भर है कि हम उसे दुःखी होकर भुगतते हैं या साक्षीभाव धारण करके। डॉक्टरों के साथ भी हमारा पिछले जन्मों का हिसाब बाकी होता है। पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, माता-पिता, बन्धु-सखा, जो भी सम्बन्ध प्राप्त हुए हैं उनके साथ भी कर्मफल के रूप में हमारा कोई न कोई ऋणानुबंध होता है। उनसे प्राप्त होने वाले सुख-दुःख, मान-अपमान, उपेक्षा-अपेक्षा या दगा, हिसाब-किताब के रूप में सामने आने ही वाले हैं। सबसे अधिक कष्ट तो स्वजनों से ही प्राप्त होना है और उसे सहन करना है। ज्ञानी आत्माओं को यह बोझ खुशी के साथ उठाकर ऋणमुक्त होना है। रोना, बिलबिलाना, लड़ना-झगड़ना, आँसू बहाना या फरियाद करना, यह सब अज्ञान ही है। इनमें समय व्यर्थ बीत जायेगा। **फरियाद के बदले में शिवबाबा कहते हैं, बार-बार मुझे याद करो तो समय सार्थक बन जायेगा, जमा भी होगा और हिसाब भी चुक्ता हो जायेगा।**

### साथ में क्या जायेगा?

वापसी यात्रा में साथ में क्या ले जा सकोगे? बाबा कहते हैं कि सूक्ष्म चीजें आत्मा अपने साथ ले जायेगी। यही चीजें अन्तिम महायात्रा को सुखद बनाने में और नई दुनिया में श्रेष्ठ भाग्य के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगी। उदाहरण के रूप में, मनसा संकल्प शक्ति या योगबल द्वारा स्वयं की और अन्य की कमी-कमजोरी भस्म कर बनाया गया जमा का खाता साथ जायेगा। दिव्य गुण, शक्तियाँ और ज्ञान की परिपक्वता साथ में जायेगी। दुआओं का जमा खाता साथ में जाएगा। शिवबाबा से प्राप्त हुए आशीर्वाद, दुआओं और वरदानों का खजाना भी साथ में जायेगा। ■■■

# सत्य का सहज स्वीकार

ब्रह्माकुमारी गीता बहन, शान्तिवन

मनुष्य आत्माएं अपने मूल स्वभाव से सत्य हैं, शुद्ध हैं, पवित्र हैं। इसलिए ही हर बात का सत्य वो जानना चाहती हैं। जीवन के व्यवहारिक क्षेत्र की बातें हों या व्यवसायिक क्षेत्र की या अंतर्जगत संबंधित – वो सत्य को पाने का ही प्रयास करती हैं।

### सत्य जानने की जिज्ञासा

रोजमर्रा की जिंदगी में हर क्षण कुछ न कुछ होता रहता है और उससे संबंधित बात उठती रहती है और फैलती रहती है। खुद से संबंध रखने वाली हर बात का तथ्य-सत्य हम जानना चाहते हैं, पाना चाहते हैं। कई बार कई लोग घटी घटना के बारे में बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं, कोई छुपाने के लक्ष्य से स्पष्टता से बात भी नहीं करते हैं। 'कुछ नहीं है', कहकर सत्य पर पर्दा डाल देते हैं। इस प्रकार के दोनों वर्णन जब हमारे सामने होते हैं तब दोनों हमें स्वीकार नहीं होते हैं। हमारा विवेक मानने को तैयार नहीं होता और फिर हम वापस सत्य की खोज में लग जाते हैं। बनी हुई घटना जितनी हमारे अपने जीवन से या जिसको हम अपना मानते हैं उससे संबंधित होती है, उतना हम उसकी तह में जाकर सत्य कारण खोजना चाहते हैं और सही निवारण पाना चाहते हैं। बाकी औरों के संबंध में होती हुई घटनाओं और बातों की हम केवल जानकारी मात्र लेते हैं और फिर उन पर चर्चा-विचारणा करके काम पूरा कर देते हैं।

### सत्य जानने के बाद स्व-परिवर्तन क्यों नहीं होता?

आश्चर्य की बात यह है कि आखिरी सत्य क्या है, यह जानने के लिए जितने हम उत्सुक रहते हैं, प्रयत्नशील रहते हैं और समय, शक्ति, धन खर्च करते हैं, उतना सत्य जानने के बाद उससे संबंधित क्या सबक सीखना चाहिए, क्या सावधानी बरतनी चाहिए या आगे से स्वयं में क्या परिवर्तन लाना चाहिए, उस संदर्भ में इतने उत्सुक और प्रयत्नशील नहीं रहते हैं। थोड़े समय के बाद हम वो सब बातें भूल जाते हैं और वापस उसी चाल से जीने लगते हैं। सत्य की खोज करने में लगे रहने वाले हम सत्य को सहज स्वीकार क्यों नहीं करते हैं? उस अनुरूप जीवनशैली, व्यवहार-विधि क्यों नहीं अपनाते हैं? हम खुद पुनः वही भूलें क्यों करने लगते हैं? सचमुच, आत्ममंथन करने की और खुद पर गौर करने की बातें हैं।

### सत्य खोजते हैं लेकिन सत्य का साथ स्वीकार नहीं करते

सत्य आग जैसा होता है। क्वचित ही किसी को अच्छा लग सकता है। आग के साथ खेलना सहज नहीं होता। सत्य कठोर होता है। सोए हुए को जगाने वाले अच्छे नहीं लगते, और ही लोग उसके विरुद्ध हो जाते हैं। इसलिए इतिहास बताता है कि जिन्होंने सत्य की उद्घोषणा की, सच बोला उनकी लोगों ने हत्या कर दी, शूली पर चढ़ाया, जहर दे दिया। शायद हम भी उन्हीं लोगों में से ही हैं जो सत्य खोजते हैं लेकिन सत्य का साथ स्वीकार नहीं करते। आज स्वयं के सत्य स्वरूप को हम भूल गए हैं, इन आंखों से जो दिखाई दे रहा है, चाहे शरीर, चाहे संसार, हम उसे ही सत्य समझ उसमें रम गये हैं इसलिए लौकिक जीवन के और भौतिक जगत के संदर्भ में तथ्यों और सत्यों को जानने की ज्यादा कोशिश करते हैं। प्रकृति के सत्य को जानकर हम काफी साधन-सुविधाएं बनाते रहते हैं, हर चीज को और अधिक क्वालिटी वाली और विशुद्ध बनाते जाते हैं। आपसी

संबंधों में भी वही नीति अपना कर बाह्य भभका बढ़ाते हैं और कहीं समीप आते, कहीं दूर होते रहते हैं।

### प्रलोभनों तथा व्यवधानों के बीच निश्चय-बुद्धि कोई विरला ही होता है

जीवन का तथा जगत का केंद्रबिंदु हम मनुष्य आत्माएं हैं। जब तक स्वयं के सत्य स्वरूप को नहीं जानते, हम स्वयं की उन्नति नहीं कर सकते। हम बाकी सब कुछ क्वालिटी वाला बनाते जाते हैं लेकिन स्वयं के जीवन की क्वालिटी ऊंची नहीं उठा पाते हैं। यही कारण है कि आज चीजों की, व्यवस्थाओं की, पद्धतियों की गुणवत्ता अच्छी कर पाये हैं, करते जा रहे हैं लेकिन स्वयं के गुण, कर्म, स्वभाव, संस्कार की गुणवत्ता अच्छी नहीं कर पाए हैं। इसी कारण हम असंतुष्ट, नाखुश और अंततः दुखी रहते हैं। सचमुच हमने संसार को सुविधा संपन्न सोने की लंका बना दिया है लेकिन खुद तो विकार-वासना संपन्न रावण ही रहे हैं बल्कि रावण के भी बाप बन गए हैं। चाहते थे सोने की द्वारिका अर्थात् देवों की दुनिया बनाना लेकिन स्वयं देवता न बन सकने के कारण बना बैठे सोने की लंका! सोचिए, हमारे अपने जीवन में, आचरण में सत्यता को स्वीकार करना कितना जरूरी है! कहते हैं, मानव मन में सर्वप्रथम यह जानने की जिज्ञासा हुई कि कोअहम् अर्थात् मैं कौन हूं? इसका प्रत्युत्तर करने हेतु अनेकों ने चिंतन किया और विचारधाराएं निकालीं। आखिरी सत्य तो परमात्मा ही बता सकते हैं। तो अब स्वयं परमात्मा ब्रह्मामुख से कह रहे हैं कि आप आत्माएं हैं, चैतन्य शक्ति हैं, शरीर में रहते हुए शरीर से अलग अभौतिक-अलौकिक सत्ता हैं। यह सत्य लाखों-करोड़ों को बताया जा रहा है और लाखों समझ भी रहे हैं लेकिन सत्य को स्वीकार कर आत्मस्मृति में रहना, आत्मदृष्टि से देखना, आत्मचिंतन करना, आत्मधर्म में स्थित होकर कर्म करना, आत्माभिमानी जीवन जीना, उसके लिए हम कदम आगे नहीं बढ़ाते हैं। कोई विरले, कोटों में से कोई तैयार होते हैं। स्वयं परिवर्तन करके, प्रलोभनों तथा व्यवधानों के बीच निश्चय-बुद्धि बना रहे वो कोई में भी कोई होता है। आज सारा संसार चाहे धर्म के मार्ग से या विज्ञान के मार्ग से सत्य जानने के पुरुषार्थ में लगा हुआ है। सदियों से लाखों-करोड़ों जीवन अगम-निगम के राजों को जानने की खोज में लगे हुए हैं। अब जबकि स्वयं परमात्मा ब्रह्मामुख से सारे ही सनातन सत्यों का ज्ञान दे रहे हैं तो उन्हें जानकर, उन सत्यों का स्वरूप बनने में हम कहां तक रुचि रखते हैं? बड़ी सोचनीय और दयनीय हमारी स्थिति बन गई है।

### सत्य का स्वरूप बनने के लिए अथक तीव्र पुरुषार्थ तथा धैर्य चाहिए

सत्य मिलने के बाद, सत्य का स्वरूप बनने के लिए अथक तीव्र पुरुषार्थ चाहिए, साथ में धैर्य भी रखना होता है। बीज बोने पर तुरंत ही फल नहीं मिलता है। बीज को मिट्टी में मिलाकर खाद, धूप, पानी देने के बाद भी बीज को प्रस्फुटित होने में, पल्लवित, पुष्पित और फलित होने में समय लगता है। उतने समय तक हमें धैर्य रखना पड़े तथा लगातार बीज को सींचते रहना पड़े। इसी प्रकार हर बात का सत्य एक बीज समान है। वास्तविक जीवन की धरती में, कर्म की कृषि में सत्यता का बीज डालेंगे, नित्य सत्संग का पानी देंगे, सद्गुण की खाद डालेंगे और योग की धूप देंगे तो सत्य अंकुरित होकर रूहानियत के फल देगा। अच्छे फल की प्राप्ति के लिए सत्य अर्थात् गुणवत्ता वाले बीज की तथा नित्य के स्वाध्याय, तप, अध्ययन, अध्यापन रूपी अध्यात्मिक पुरुषार्थ की आवश्यकता है। इस अनिवार्य परिश्रम में हम ज्यादा से ज्यादा विचार, वाणी, कर्म, समय, संपत्ति, शक्ति लगाएँ, सफल करें।

### दृढ़ मनोबल विकसित होता है स्वयं के सत्य स्वरूप को रोज महसूस करने से

हमारी सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि सत्य समझने के बाद उसे जीवन में चरितार्थ करने की मेहनत करने के लिये हम तैयार नहीं हैं। ऐसा दृढ़ मनोबल तभी विकसित होता है जब हम स्वयं के सत्य स्वरूप को रोज महसूस करें और परमसत्य के प्यार में मगन हो जाएँ। हम कहते भी हैं कि परिवर्तन संसार रूपी कर्मक्षेत्र का नियम है, यहाँ कुछ

भी स्थायी नहीं है। हर चीज नई से पुरानी स्वत: होने लगती है। हम प्रकृति के संसर्ग में आकर सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाते हैं। हमारा संपर्क, सबंध, प्रवृत्ति, समाज सब कुछ सत्य से दूर होकर भ्रष्ट-पतित बनता जा रहा है। अब इन सब के संग में रहते हैं तो तमोप्रधानता का ही रंग एक-दूसरे पर लगता रहता है। अगर हम सत्य को जीवन में धारण करना चाहते हैं तो किसी भी संग में रहते हुए हमें रंग केवल उसका लगाना है जो सत्य है। हम स्वयं सत्य, चैतन्य, आनंद स्वरूप हैं। जितना मन, वचन, कर्म से अपने सत्य, शुद्ध आत्मस्वरूप के चिंतन में, मनन में, अनुभव में रहेंगे उतनी ही व्यवहारिक जीवन के, सांसारिक जगत के सत्यों को धारण करने की शक्ति आने लगेगी । इसी प्रकार सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्, सर्वोच्च सत्ता परमात्मा के मनन, चिंतन, स्मरण में रहने से परमात्मा के गुणों का रंग लगता है। आत्मा शक्तिशाली बनती जाती है और जीवन को सत्य के मार्ग पर चलाना संभव व सहज होता जाता है।

### विस्तार करने में, शब्दों की शक्ति बह जाती है

सत्य को खोजने का श्रम सफल करना है तो सत्य को जीवन में धारण करने का पुरुषार्थ भी इतना ही करना जरूरी है। कोई भी बात का सत्य खोजने पर हम शांतचित्त से उस पर गौर करें, गहराई से इस पर सोचें, तो सत्य का महत्व ज्यादा महसूस होता है। अगर वर्णन करने में, जहां-तहां बताने में सिर्फ लग जाते हैं तो सत्य को धारण करने की क्षमता नहीं बनती। वर्णन में, विस्तार करने में, शब्दों की शक्ति बह जाती है। इसलिए ही उच्च, अलौकिक अनुभूतियों को गुप्त रखने के लिए कहा जाता है परंतु हम सत्य खोजकर किसी का भांडा फोड़ने में ज्यादा रुचि रखते हैं तो वह वाणी द्वारा ज्यादा वर्णन करते रहते हैं, अनेकों को बताते रहने से शक्ति का ह्रास होने लगता है। फिर स्वयं में सत्य धारण करने की शक्ति नहीं रहती और हम खुद भी असत्य कर्म करने लगते हैं। कोई झूठ बोलता है तो हम गुस्सा करते हैं मतलब कोई एक भूल करता है तो हम दूसरी भूल करते हैं। अंतत: न वो, न हम अभूल बन पाते हैं।

संसार-चक्र में अभी जो समय चल रहा है वो महापरिवर्तन-आमूल परिवर्तन का समय है जब परमात्मा आकर ब्रह्मामुख से सारे ही सत्य स्पष्ट करते हैं। यह समय सत्य खोजने का नहीं है, परमात्मा द्वारा बताए जा रहे सत्यों को विवेकसंगत रूप से समझने का, अभ्यास में लाने का और उसका अनुभव कर आचरण को सत्य-श्रेष्ठ बनाने का है। आवश्यकता है उस परमसत्य के प्रति एकाग्र होने की। हम अपने समय, संकल्प, श्वास को वर्णन-विस्तार में न गंवाएं बल्कि वो सारी शक्ति सत्य के प्रति केंद्रित होने में सफल करें। तभी हम सत्ययुग लाने में सूत्रधार बन सकेंगे, नींव की ईंट बन सकेंगे। ■■■

## ज्ञानामृत की कमाल

■■■ ब्रह्माकुमार पुरूषोत्तम, ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत

संगमयुग की वेला में है,
ज्ञानामृत की कमाल।
इसमें पढ़ कर लेख-कविता,
सदा रहो खुशहाल।।
मन के सारे बोझ मिटा,
देती है खुशियों का अंबार।
दिव्य गुणों से सबको सजा कर,
करती है नैय्या पार।।
अनुभव ला कर हमें सुनाती,
जीवन में भरती सार।
आप भी सुन लो इसकी महिमा,
कितनी है अपरम्पार।।
यह ज्ञान खजाने लेकर आती,
करती है मालामाल।
अपना साथी इसे बना कर सदा रहो खुशहाल।।

# क्या आत्महत्या समस्या का समाधान है?

ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

वर्तमान समय आत्महत्या साधारण-सी बात हो गई है। प्राय: एक न एक खुदकुशी की खबर रोज अखबारों में छपी होती ही है। एक रिपोर्ट के अनुसार, विश्व में प्रति वर्ष लगभग आठ लाख से दस लाख लोग आत्महत्या करते हैं। इनमें में अधिकतम युवा होते हैं जो जीवन से हार कर, जीवन का अन्त कर लेते हैं। आखिर कौन-सी वजह होती है, जो लोग आत्महत्या का निर्णय लेते हैं? क्या परिस्थितियां इस कदर विकराल लगने लगती हैं कि व्यक्ति का जीवन से ही मोह-भंग हो जाता है। शोध से पता चलता है कि ज्यादातर लोग रिश्तों में तनाव, परिवार के तनाव, सामाजिक दबाव, वित्तीय संकट, अपमान, उदासी, डिप्रेशन एवं असफलताओं के कारण उत्पन्न समस्यायों में उलझकर मानसिक संतुलन खो देते हैं और भावनात्मक गुबार या आवेश में जीवन का अन्त कर लेते हैं परन्तु क्या यह प्रक्रिया इन सभी समस्याओं का समाधान है?

**जीवन समाप्त करने से क्या समस्याएँ समाप्त हो जाती हैं?**

वास्तव में आत्महत्या शब्द ही गलत है क्योंकि आत्मा की हत्या सम्भव ही नहीं है। इसे देह-हत्या, देहघात या जीवहत्या कह सकते हैं। मृत्यु एक अटल सत्य है जिसे प्राय: सभी जानते हैं। जीवन रूपी सफर का अन्तिम पड़ाव या आखिरी मंजिल है मृत्यु। जन्म और मौत के बीच का सफर ही जीवन है, कर्मभूमि है या कहें कि स्वर्णिम अवसर है जिसमें अच्छे कर्म करके हम आने वाले जन्म को सहज एवं सुखदाई बना सकते हैं। आत्महत्या करके व्यक्ति न केवल अपना ये जन्म खराब कर लेता है अपितु आने वाले कई जन्मों को भी ग्रहण लगा लेता है। ईशा उपनिषद् में आत्महत्या करने वाले मनुष्य को दुष्ट माना गया है और उसके लिए कहा गया है :

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽवृता।
तांस्ते प्रेत्याभि गच्छन्ति ये केचात्महनो जना:।।

अर्थात् 'जो व्यक्ति आत्महत्या करता है वो मरने के बाद अंधकारमय, जहां पर सूर्य का प्रकाश न हो, ऐसे लोक में जाता है।'

व्यक्ति अपने जीवन में एक साथ कई भूमिकाएं निभाता है जैसे कि माता या पिता, भाई या बहन, पति या पत्नी, बेटा या बेटी आदि। कारोबार या धन्धेधोरी में भी उसके अलग-अलग किरदार होते हैं जैसे मालिक या नौकर आदि-आदि। जब कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है तब उन सब रिश्तों पर, जिनकी डोर उसके जीवन के साथ जुड़ी होती है, बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है, विशेषकर उन पर जो आत्महत्या करने वाले पर आश्रित होते हैं। सामान्यत: व्यक्ति की मौत परिवार के लिये दु:ख का विषय होता ही है परन्तु यदि वो मृत्यु आत्महत्या से हुई हो तब उसका प्रभाव और ही ज्यादा होता है। व्यक्ति यह सोच कर आत्महत्या करता है कि जीवन की समाप्ति के साथ ही सारी समस्याएँ भी समाप्त हो जायेंगी परन्तु यह

मिथ्या है क्योंकि समस्या जस की तस रहती हैं।

### कारण बेबुनियाद होते हैं

हाल ही में खबरों की सुर्खियों में ऐसे लोगों द्वारा आत्महत्या की खबरें रही हैं, जो कामयाब एवं सफल थे एवं जिन्हें किसी भी आर्थिक संकट से जूझना नहीं पड़ रहा था। इसलिए यह कहना कि लोग आत्महत्या आर्थिक तंगी के कारण करते हैं या असफलता के कारण करते हैं, बिल्कुल ही गलत है। इससे एक और बात भी स्पष्ट हो जाती है कि कामयाबी के इस मुकाम तक पहुंचने के लिये इन लोगों ने बहुत-सी मुश्किलों और चुनौतियों का सामना किया होगा और पार भी किया होगा। इसलिए ये कहना भी कि खुदकुशी करने वाला व्यक्ति डरपोक या कमजोर होता है, गलत है। दुनिया में ऐसे अनेक लोग हैं जिन्होंने अपनी दृढ़ इच्छा बल से न सिर्फ समस्याओं का समाधान किया बल्कि उन्हें एक अवसर में बदल कर अपना नाम भी किया है। परीक्षा में फेल होने पर कई विद्यार्थी आत्महत्या कर लेते हैं परन्तु कई ऐसे खिलाड़ी हैं जो परीक्षा में कई-कई बार फेल हुए, लोगों की कड़वी बातों का सामना भी किया परन्तु आत्महत्या नहीं की। पढ़ाई-लिखाई में कमजोर होने के कारण उन्होंने खेल-कूद में परिश्रम किया और विश्व में अपना नाम किया। ऐसे भी अनेकों लोग हैं जिन्होंने व्यापार में बार-बार असफल होकर भी हर बार फिर से प्रयास करते-करते सफलता को पाया और अपनी पहचान बनाई, आत्महत्या नहीं की। जिन्हें अपने ऊपर भरोसा हो, जिनका आत्मबल अटूट हो, वे परिस्थितियों से निरन्तर लड़ते रहते हैं, भले ही हार मिले या जीत परन्तु अपना प्रयास नहीं छोड़ते। वास्तव में कोई भी ऐसा कारण नहीं होता है जो आत्महत्या करनी पड़े, ये बहाना बिल्कुल ही गलत है। किसी शायर ने कहा है-

जिन्दगी खूबसूरत है बस जीना सीख लो,
अपने ज़ख्मों को खुद ही सीना सीख लो,
हर चीज़ में नशा है मेरे दोस्त,
बस पीना सीख लो।।

### आत्महत्या कायरता है

संसार में शायद ही कोई व्यक्ति होगा जिसने छोटी-बड़ी परिस्थितियों का सामना न किया हो। परिस्थितियां हमें कुछ सिखाती हैं, मजबूत बनाती हैं। हर समस्या एक सुअवसर होती है, जिसे पार करने पर और अधिक प्रेरणा मिलती है। इसके विपरीत, कुछ लोग समस्याओं को पहाड़ बना लेते हैं, परिस्थितियों को कभी न खत्म होने वाला सागर मान लेते हैं और एक बार जब मरने का तय कर लेते हैं फिर उनमें समस्याओं का सामना करने की शक्ति नहीं रहती। जीवन से मायूस होकर वे मृत्यु को एकमात्र अन्तिम, सहज और सरल मार्ग समझ लेते हैं। वास्तव में आत्महत्या कायरता है, जिसमें व्यक्ति अपनी नाकामियों को, कमजोरियों को, समस्या का चोला पहना देता है या किसी और के सिर दोषारोपण करके अपने जीवन को खत्म कर देता है। किसी शायर ने कहा है -

मुश्किलों से भाग जाना आसान होता है,
हर पहलू जिन्दगी का इम्तिहान होता है।।
डरने वालों को मिलता नहीं कुछ जिन्दगी में,
लड़ने वालों के कदमों में सारा जहान होता है।।

### आत्म-ज्ञान

आत्म-ज्ञानी व्यक्ति कभी आत्महत्या नहीं करेगा। प्रायः लोग आत्मा और शरीर को एक मान लेते हैं इसलिये 'शरीर को खत्म करके सबकुछ खत्म हो जायेगा' ऐसा सोच कर ये कुकर्म करते हैं। परन्तु वास्तविकता में शरीर भले ही खत्म हो जाता है परन्तु आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है। आत्मा एक शरीर छोड़, गर्भ के माध्यम से दूसरे शरीर में प्रवेश करती है तथा आयु पूरी करके, शरीर को छोड़ फिर से नया जन्म लेती है। जन्म और मरण की इस प्राकृतिक प्रक्रिया में जब आत्मा एक शरीर को छोड़ती है तब कर्म अनुसार उसका अगला शरीर पहले से ही तैयार होता है, जिसमें वह प्रवेश करती है। परन्तु आत्महत्या के कारण हुई मृत्यु से आत्मा अधर में ही रह जाती है और तब तक भटकती है जब तक उसके समय का चक्र पूरा नहीं हो जाता। आत्महत्या के बाद व्यक्ति की आत्मा हमारे बीच ही भटकती रहती है, न इधर की रहती है, न उधर की।

इससे आत्मा की दशा और भी ज्यादा कष्टकारी, भयंकर एवं पीड़ादायक हो जाती है।

### आत्महत्या महापाप

जीवन परमात्मा का दिया हुआ अनोखा उपहार है अत: आत्महत्या परमात्मा का और उसकी रचना प्रकृति का घोर अपमान है। यह पाप ही नहीं बल्कि महापाप है। आत्महत्या करने वालों को बहुत ही कड़ी सज़ा मिलती है। इस महापाप से बचने का एकमात्र उपाय है, परमात्मा का स्मरण करना। उसे हर कर्म से पहले याद करना, उसका धन्यवाद करना। परमात्मा का स्मरण करने वाला व्यक्ति उस पर सम्पूर्ण विश्वास करता है एवं यह मानता है कि परमात्मा जो करता है, अच्छे के लिए करता है। इसलिए वो हर परिस्थिति को सहर्ष स्वीकार कर लेता है। परमात्मा को साथी बनाने से हिम्मत और हौसले के साथ परिस्थितियों का सामना कर सकते हैं और उन पर जीत भी पा सकते हैं। ईश्वर को याद करने से मन में कभी भी निराशा नहीं आयेगी बल्कि आशा और उत्साह बना रहेगा। परमात्मा पर सम्पूर्ण निश्चय से इस महापाप से बचा जा सकता है।

### अन्त मति सो गति

मरने के बाद आत्मा की गति उसके जीवनकाल के आचरण एवं व्यवहारों के अनुसार होती है। गाया भी गया है कि अन्त मति सो गति। गीता के आठवें अध्याय के श्लोक पाँच में अन्तकाल के चिंतन का महत्व बताया गया है:

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
य: प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्य संशय:।।

अर्थात् 'जो अन्तकाल में मुझको स्मरण करके देह त्याग करता है वह साक्षात् मेरे गुणों को प्राप्त करता है, इसमें कोई संशय नहीं है।'

मृत्यु के समय मनुष्य जो विचार करता है अथवा जिसका चिन्तन करता है, उसका अगला जन्म उसी प्रकार होता है। आत्महत्या करने वाला व्यक्ति भले ही आवेश में आकर यह निर्णय लेता है परन्तु अन्त समय वह जीने के लिए तड़पता है और संघर्ष करता है जिसके कारण उसकी आत्मा मरने के बाद भी मुक्त नहीं हो पाती और सूक्ष्म शरीर में रह यातनायें सहती है।

### आत्महत्या से बचने के उपाय

वास्तव में मन में आत्महत्या का ख्याल आना विकृत मानसिकता का एक रूप है, जिससे अपने आप पर कन्ट्रोल नहीं रहता और बार-बार मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आता है। ऐसे विचार बार-बार आते-आते एक दिन व्यक्ति उन्हीं संकल्पों के अधीन हो जाता है और अज्ञानतापूर्वक ऐसा निर्णय ले लेता है। इससे बचने के कुछ सहज उपाय हैं जिनका अनुसरण करने पर ऐसे पाप कर्म से बचा जा सकता है या इस प्रकार की मानसिकता से ग्रसित व्यक्ति को बचाया जा सकता है।

1. प्राय: मन की अस्थिरता के कारण व्यक्ति विचार करने की शक्ति को गंवा देता है और अच्छे-बुरे का फर्क नहीं जान पाता। ऐसे में राजयोग का अभ्यास बहुत ही फायदेमंद है। राजयोग के अभ्यास से मन की एकाग्रता शक्ति, परखने की शक्ति एवं निर्णय करने की शक्ति बढ़ती है जिससे व्यक्ति उचित निर्णय लेता है।

2. अपने जीवन की अहमियत को समझें। जीवन अनमोल है, इसे अच्छी तरह जानकर समस्याओं में अपना संयम न खोयें।

3. इस संसार में प्रत्येक चीज़ परिवर्तनशील है। परिस्थितियां भी हमेशा के लिए नहीं रहती हैं, बदलती रहती हैं इसलिये विपरीत परिस्थितियों में अनुकूल परिस्थिति का इंतजार करें, स्वयं पर नियन्त्रण रखें।

4. भावनाएं सदा एक जैसी नहीं रहती, वे लगातार बदलती रहती हैं। आज आप जैसा महसूस कर रहे हैं, हो सकता है, कल आप वैसा न करें इसलिए भावनाओं पर नियन्त्रण रखें।

5. जीवन के अच्छे एवं सुखदाई पलों का स्मरण करें एवं उन्हें फिर से ताजा करने का प्रयत्न करें।

6. ऐसे समय में किसी आध्यात्मिक व्यक्ति का संग करें एवं उससे ज्ञान-चर्चा करें। ज्ञान से मन की आंखें खुल जाती हैं और मन ईश्वरीय प्रेम में मस्त हो जाता है।

7. प्रेरणादायक पुस्तकों का अध्ययन करें, उनसे प्रेरणा लें। अपने मन को बहलायें, अच्छे मित्रों का संग करें।

8. स्वयं को स्वयं का अध्यापक बनायें, अपने आप से

बातें करें, परोपकार का कार्य करें, खुद को समझें और अपनी प्रशंसा करें।

9. ईश्वर के प्रति अपनी निष्ठा कायम रखें, उनसे समीपता का अनुभव करें, उन पर पूर्ण विश्वास करें, उन्हें अपना साथी, अपना रक्षक मानें एवं जो हो रहा है उसे नाटक समझ, प्रत्येक दृष्य को साक्षी होकर देखें।

10. कर्मों की गुह्य गति को अच्छी तरह समझें, आत्माओं के साथ अनेक जन्मों के हिसाब-किताब को जानें और अपना कर्त्तव्य करें।

11. किसी ज्ञानी व्यक्ति से मन की बात साझा करें और उससे राय लें।

किसी शायर ने कहा है कि

**बदल जाओ वक्त के साथ,**
**या फिर वक्त बदलना सीखो।**
**मजबूरियों को मत कोसो,**
**हर हाल में चलना सीखो।।** ■■■

# जेल में मिला अनूठा ज्ञान

■■■ ब्रह्माकुमार कर्णसिंह पँवार, जिला कारागार जींद (हरियाणा)

मैं असिस्टेंट फोरमैन, बिजली विभाग में सेवारत था, अब 2009 से जिला कारागार जींद में परिवार के 9 सदस्यों सहित बंदी हूँ। यहाँ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नियमित क्लास चलती है और मैं वहाँ का नियमित विद्यार्थी हूँ। आरम्भ में यह ज्ञान ठीक से समझ में न आने के कारण मेरी रुचि नहीं बनी। फिर बहनजी ने साप्ताहिक कोर्स करवाया। उसके बाद ज्ञान ऐसा समझ में आया कि अब अगर एक दिन भी किसी कारणवश क्लास न मिले तो सब सूना-सूना-सा लगता है। ज्ञान में चलते हुए जब लगभग एक वर्ष हो गया तब एक दिन अमृतवेले बाबा की टचिंग हुई। क्या देखता हूँ कि ब्रह्मा बाबा की भृकुटि में सफेद लाइट, सूर्य की तरह चमकते हुए उसका पूरा विस्तार हो गया। यह तेज इतना सुखदाई था कि मैं अपलक देखते-देखते आत्मविभोर हो गया। फिर ब्रह्मा बाबा का चित्र अदृश्य होकर सारा ही तेजपुँज हो गया। उस आनन्द का वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता।

इस ज्ञान में आने से पहले मैंने एक गुरु भी किया था। उनसे भी ज्ञान की प्राप्ति हुई, मैं उनका भी आभारी हूँ परन्तु बाबा ने जो ज्ञान दिया है, यह अनूठा है। इस ईश्वरीय ज्ञान में लक्ष्य है नर से श्री नारायण तथा नारी से श्री लक्ष्मी समान बनने का। इससे 21 जन्मों की प्रालब्ध बन रही है। यहाँ आत्मा, परमात्मा और ड्रामा का यथार्थ ज्ञान मिला है जिससे समस्याओं का हल हो रहा है। राजयोग से प्राप्त होने वाली अष्ट शक्तियों का पता चला है। बाबा के ज्ञान ने पवित्रता पर पूरा ध्यान खिंचवाया है। पवित्रता धारण करने से बहुत से गुण स्वत: आ गए। पवित्रता इस ज्ञान का आधार है।

आत्मा के सात गुणों का ज्ञान देकर स्वमान में जीना और अभिमान, अहंकार तथा देहभान का त्याग करना सिखाया बाबा ने। मन को मंगल मार्ग पर लाना सबसे बड़ी कला है। यह भी समझ मिली कि स्वस्थिति ठीक है तो परिस्थिति कुछ भी नहीं। बीती को बीती करके वर्तमान में जीने का ज्ञान मिला है। समर्पित भाव से जीओ तो सारे कष्ट बाबा हर लेता है। जैसे बाबा बेहद है, बाबा का ज्ञान भी बेहद है। बाबा का ज्ञान हमें कहता है कि तीन बिन्दुओं को कभी मन भूलो – आत्मा बिन्दु, परमात्मा बिंदु और बीती बातों को बिन्दु लगाओ।

मैं जींद कारागार में योगा टीचर भी हूँ। सन् 2009 से नियमित योगा भी करवाता हूँ। कारागार के माध्यम से वर्ल्ड लेवल के योगा टीचर का सर्टिफिकेट भी मिला है। मैं इस उपलब्धि का श्रेय शिवबाबा व ब्रह्मा बाबा को देता हूँ। ■■■

# ईशू दादी जी ईमानदारी-वफादारी की साक्षात् देवी थी

ब्रह्माकुमार हेमंत भाई, शांतिवन

यज्ञ इतिहास और भगवद् चरित्रों को समीपता से देखने वाली दादी ईशू जी, ब्रह्मावत्सों की जीवन कहानियों के पत्र पढ़कर, बाबा के समक्ष उनका चित्रण करने वाली एक चित्रगुप्त भी थी।

### बाबा के चुंबकीय व्यक्तित्व का आकर्षण

दादी जी का जन्म सिंध-हैदराबाद में 1 मई सन् 1928 को हुआ। पिता 'दयालदास थदानी' एवं माता 'कमला' ने उन्हें नाम दिया 'ईश्वरी'। सदा शांतचित्त व धीर-गंभीर स्वभाव के अनुरूप शिवपिता ने अलौकिक नाम दिया 'पूर्णशांता'। ब्रह्माबाबा लाड से 'ईशू' कहते थे। दादी का घर बाबा के घर के पास ही था। एक दिन दादी बाहर निकली, सामने बाबा खड़े थे, उन्हें देखते ही जैसे साक्षात्कार हुआ कि ये कोई साधारण इंसान नहीं लेकिन बहुत ऊंचे व्यक्ति, दैवी हस्ती, महान विभूति, महापुरुष हैं, इनमें कुछ पॉवर है। दादी मातपिता से बोली, 'मैं इनके पास जाती हूँ।' तो वे सत्संग में लेकर गये। वहां दादी, बाबा के चुंबकीय व्यक्तित्व से आकर्षित हो गई। बाबा के नि:स्वार्थ प्यार-दुलार ने दादी को बाबा का दीवाना बना दिया। वे मातपिता से बोली, 'मैं बाबा के पास ही रहूंगी।' मातपिता ने भी खुशी से छूट्टी दी, तब बच्चों के लिए बाबा द्वारा खोले गए बोर्डिंग में सात वर्षीया ईश्वरी रूहानी व जिस्मानी पढ़ाई पढ़ने लगी। उसी दरम्यान दादी से 6 वर्ष छोटी बहन 'लच्छू दादी' व चार भाईयों सहित पूरा परिवार समर्पित हुआ।

### परमात्म टंचिग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की

इसी बीच सिंध-हैदराबाद में पवित्रता पर हंगामे हुए तो बाबा कराची गये। जिन बच्चों के नाम वारंट निकले वे घर गये। भाग्यशाली दादी बाबा संग कराची आई। बाबा मुरली चलाते तो दादी नोट्स लेती पर बाबा की स्पीड (गति) बहुत फास्ट होती, तो कोई लिख नहीं पाता। इसलिए दादी ने परमात्म टंचिग को कैच कर सांकेतिक लिपि की रचना की। लम्बे शब्दों व वाक्यों के प्रतीक बनाए, जैसे लक्ष्मी नारायण के लिए LN (एल एन), सृष्टिचक्र का गोल चिन्ह, ऐसे कई निशानियां नोट कर याद की, उसी आधार से पूरी मुरली लिख लेती। दादी, मम्मा के साथ रहती व बाबा अलग रहते। इसलिए वे बाबा के पास क्लिफ्टन पर मिलने जाते, जहां बाबा हंसाते, बहलाते, प्यार से मीठी-मीठी बातें सुनाकर खुश करते। बाबा कहते, 'खुशी जैसी खुराक नहीं, सदा खुश रहो, नाचते रहो, हंसते रहो, उड़ते रहो, कभी नाराज होकर न रोना, न मूड ऑफ कर मुरझाना।' दादी कहती, 'बाबा आपकी सुनाई अच्छी-अच्छी बातें नोट की हैं', तो बाबा प्रसन्न हो प्यार बरसाते। मम्मा के भवन में वापिस आने पर, मम्मा सुनाने के लिये कहती तो वे बाबा की बातें सुनाती, सभी खुश हो ताली बजाते। उन्हें अपने भाग्य पर नाज होता कि बाबा ने बचपन में ही हाथ पकड़ा है। मम्मा-बाबा के अंगसंग 14 वर्ष की भट्ठी में पाई अपार खुशियाँ बयां करते, दादी के हृदयवीणा के तार झंकृत हो गा उठते, 'खुशियों भरी जिंदगानी हमारी, देवी-देवताओं से भी जो है प्यारी!'

### सच्चाई-ईमानदारी-वफादारी के संस्कार

शांत स्वभावी ईशू दादी की सच्चाई-ईमानदारी-वफादारी के संस्कार देख, दादी की नौ वर्ष की उम्र से ही बाबा उन्हें तिजोरी की चाबियां सौंपने लगे। यज्ञ के आदि से ही बाबा की राइट हैंड बन, वे यज्ञ का स्थूल खजाना व आर्थिक कारोबार संभालने के निमित्त बनी। बाबा-मम्मा प्यार से उन्हें 'मनी प्लांट' भी कहते थे। वे बाबा के हर आदेश को सिरमाथे रख श्रीमत के नक्शेकदम चलती रही व परीक्षा की हर कसौटी में सच्चे सोने समान खरी

उतरी। एक दिन बाबा ने फरमान किया, '15 दिन कोई भी बाहर का व्यक्ति मकान के अंदर नहीं आ सकता है, सफाईकर्मी (जमादार) भी नहीं, गेट को ताला लगा दो, सब कुछ अपने हाथों से करना है।' ड्राईवर भी नहीं आ सकता था। यज्ञ में एक बड़ी बस थी, बाबा बोले, 'बस की सफाई भी तुम्हें करनी है,' तो दादी ने कुछ बहनों के साथ मिलकर, बस के नीचे जाकर सफाई की।

### निश्चय का कमाल!

भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद दादी बाबा संग आबू आई। तब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय आर्थिक मंदी (बेगरी पार्ट) के दौर से गुजर रहा था किंतु बाबा ने महसूस ही नहीं होने दिया। बाबा पांडव भवन से गुरुशिखर (पीस पार्क) तक पैदल लेकर जाते, युवावस्था में दादियां पहाड़ियां चढ़-चढ़ कर जातीं और चेरी व कैरी खाकर खुश होकर लौटतीं, बाबा साथ थे तो बेगरी लाईफ होते भी खुश रहतीं। एक बार दादी व तीन अन्य बहनों को डायरिया हुआ, दादा विश्वकिशोर जी को पता चला, पर उनके पास सिर्फ एक आना ही बचा था, तो एक गोली लाये, बाबा ने उसके चार टुकड़े कर, चारों को पानी के साथ पिला दिया। सबके निश्चय का कमाल! डायरिया एकदम ठीक हो गया।

ऐसे ही एक बार बाबा पांडव भवन से पैदल ही आबू रोड (शांतिवन) ले आये व रात्रि को एक स्कूल में सभी ने रेस्ट किया। सवेरे जागे तो बाबा बोले, 'सिर पर बड़े-बड़े पेठे लेकर, चलो आबू, कोई गिरा तो फेल! तो सभी सिर पर पेठा ले, ऊपर (आबू) पहुंचे, तब मम्मा ने बस स्टैंड पर आकर गुलाब जल डाल, स्वागत कर उत्साहवर्धन किया। बाबा-मम्मा संग बीते अतीद्रिंय सुख भरे दिन याद आते ही दादी फूले न समाती। वे भावविभोर हो दिल से गाने लगती, 'वो दिन भी कितने प्यारे थे, जब बाबा साथ हमारे थे।'

### ज्ञान-सागर को हप करने वाली ज्ञान-बुलबुल

चतुरसुजान बाबा ने दादियों को सेवार्थ भेजा, जिससे बाबा की मुरली के मस्ताने बच्चे ज्ञान में आने लगे। तब बाबा दादी को कहते, 'अन्य काम छोड़ो, 11 बजे तक मुरली लिखकर तुम्हें ही तैयार करनी है।' तब दादी यह नहीं सोचती कि मैं कैसे कर पाऊंगी? बाबा लिखवा रहे हैं, इसी नशे व खुशी में, मुरली का एक अक्षर भी मिस न करते हुए, चार-चार पेज की मुरली लिखती, कॉपियाँ बनाती व समय पर मुरली पोस्ट करती। शुरू-शुरू में अव्यक्त बापदादा की पधरामणी में भी वे रात-रात भर जागकर मुरलियां लिखती थी। सचमुच ईशू दादी तो ज्ञान-सागर को हप करने वाली वो ज्ञान-बुलबुल थी, जिनकी करिश्माई कलम से लिखी मुरलियों की तान गोप-गोपियों को रिझाती रही, रिझा रही है।

### बाबा की पर्सनल सेक्रेटरी

सेवाएं परवान चढ़ने लगीं, तो बाबा पत्रों से मार्गदर्शन कर सभी में उंमग भरते। बाबा के हस्तों से सिंधी में लिखे पत्रों पर दादी हिंदी में एवं जो सिंधी पढ़ते, उनके पत्रों पर वे साफ सिंधी में लिखती। बाबा को कभी बांधेली गोपिकाओं के प्यार-पुकार के पत्र, कभी जीवन-कहानियों के खत या व्यक्तिगत पुरुषार्थ के चार्ट, तो कभी सेवाक्षेत्र की समस्याओं के पत्र आते। उन सारे पत्रों को दादी पढ़ती, पत्रों से गोपनीय बातें व कर्मों का लेखा-जोखा जान, चित्रगुप्त बन दर्ज करती व बाबा को सुनाती, पर उनके मानस-पटल पर अशंमात्र भी छपता नहीं। जैसे गंगा, सागर में अपना सब उड़ेल कर स्वच्छ हो जाती है, ऐसे ही दादी भी सारा समाचार शिवसागर में समा देती व निर्मल गंगा बन जाती। बाबा के लिखे जवाबी पत्रों पर हूबहू सिंधी या हिंदी लिखते हुए कभी-कभी उन्होंने एक घण्टे में 16-16 पत्र भी लिखे। बाबा जहां जाते, वहां उन्हें ले जाते व दादी को प्राईवेट या पर्सनल सेक्रेटरी कहते।

### सादगी का सैम्पल

बाबा के अव्यक्त होने के बाद ईशू दादी, दीदी मनमोहिनी व दादी प्रकाशमणि के संग राइट हैंड रही। दीदी मनमोहिनी अपनी साड़ी प्रेस के लिये न देकर, उसे लपेट कर कुर्सी पर रखती और उस पर बैठ जाती, तो साड़ी प्रेस हो जाती। ऐसे ही क्वीन मदर (दीदी की लौकिक माँ) अमीर घर की होते भी पाई-पाई का हिसाब लिखती। क्वीन मदर व दीदी के संग में ईशू दादी

**शेष भाग पृष्ठ 23 पर ...**

# ईश्वरीय प्रेम की अग्नि परीक्षा

ब्रह्माकुमार जयप्रकाश, शान्तिवन, साइटसीन कार्यालय

14 फरवरी, 2010 के वैलेंटाइन डे पर मैं अपने अलग ही मनसूबे के साथ पार्क की ओर बढ़ता जा रहा था, तभी कुछ लोगों की भीड़ दिखाई पड़ी। वैसे तो जहाँ भीड़, वहाँ मैं नहीं पर उस भीड़ में एक अलग ही कशिश थी। हनुमान मंदिर के परिसर में शिवरात्रि के अवसर पर चित्र-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। श्वेत वस्त्रों में खड़े ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियाँ बहुत जाने-पहचाने से लग रहे थे। मैं रुक गया और चित्रों को निहारने लगा। ब्रह्मा जी के स्थान पर किसी मनुष्य को बैठाया देखकर बड़ा हैरान हुआ और सोचा कि इन लोगों ने तो पैसे कमाने के लिए हर सीमा ही पार कर दी! मैंने किसी से कुछ पूछा नहीं, बस, सुनता और देखता रहा। मेरे मन में एक विचार आया कि क्यों ना इन पर एक लेख लिखूं और अखबार वालों का दे दूँ, ऐसी-ऐसी संस्थाओं के काले कारनामों का भंडाफोड़ तो बहुत आवश्यक है। मैं दूसरे दिन भी प्रदर्शनी में गया, सफेद वस्त्रों में था इसलिए लोग मुझे भी ब्रह्माकुमार समझ कर मुझसे भी प्रश्न पूछने लगे और मैंने काफी लोगों को प्रदर्शनी समझायी भी। बाबा की कमाल है कि उसने दूसरे ही दिन मुझे प्रदर्शनी समझाना सिखा दिया।

### साप्ताहिक कोर्स

जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ रहा था तभी से मैं और मेरा पूरा परिवार विहंगम योग संस्थान से जुड़ गये थे। मैं सुबह 4.00 बजे उठकर योग करता था। मेरे गुरु सबसे श्रेष्ठ हैं, ऐसा मैं सोचता था और इसी संकल्प के प्रभाव में आकर मैंने सोचा कि इन सभी भटके हुए लोगों को रास्ता दिखाना पड़ेगा, जो किसी मनुष्य को ब्रह्मा समझ रहे हैं। मैंने एक भाई से सेंटर का पता पूछा तथा 7 दिनों का कोर्स प्रारम्भ कर दिया। कोर्स के दौरान मैंने कुछ भी पूछा नहीं। मेरा सारा गुरु ज्ञान कहाँ चला गया, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पुराना नशा उतर गया और एक नया नशा चढ़ गया। सातवें दिन जब मैं बाबा के कमरे में बैठा तो मुझे अशरीरी स्थिति का अनुभव हुआ तथा ब्रह्मा बाबा के स्थान पर नारायण का चित्र दिखा। मुझे प्रेम हो गया शिव बाबा से। मैं जिसे ढूँढ़ रहा था, अब वही मिल गया। मैं अपनी लौकिक क्लास में पूछा करता था कि सर! मैं कौन हूँ? तब सर बड़ी आसानी से डार्विन का सिद्धान्त समझा दिया करते थे। मेरे उस प्रश्न से मुझे अब जाकर मुक्ति मिली। बाबा की कमाल थी, कोर्स समझाने वाले एक बात समझाते थे और मुझे 10 बातें स्वत: ही समझ आ जाती थीं। कोर्स समाप्त हुआ और साथ ही सारी भ्रातियाँ भी।

### परीक्षाओं का प्रारम्भ

पढ़ाई के लिए मैं गाँव से दूर आरा शहर में रहता था। कोर्स समाप्त हुए अभी 15 दिन भी नहीं बीते थे कि होली आ गयी, होली के अवसर पर घर जाना हुआ। मुझे तो बहुत ही नशा चढ़ा हुआ था कि घर जाकर सबको इस ज्ञान के बारे में बताऊंगा लेकिन माया मुझसे भी आगे निकल गयी। मेरे किसी शुभचिंतक ने घरवालों को अच्छे से मिर्च-मसाला लगा कर सारी जानकारी दे दी थी। मेरे समझाने से पहले ही घरवालों ने मुझे समझाना शुरू कर किया कि तुम्हें जन्म देना, खिला-पिलाकर बड़ा करना, पढ़ाना-लिखाना सब व्यर्थ हो गया। जिन माँ-बाप ने तुम्हें जन्म दिया, तुमने उन्हें ही भुला दिया। तुम पर इन ब्रह्माकुमारियों ने जादू कर दिया, अब तुम घर से भाग जायेगा, शादी नहीं करेगा और कुछ दिन बाद तुम पागल हो जायेगा। विहंगम मार्ग, जिसे हमारे घरवाले फॉलो करते थे, से जुड़े लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि यदि तुम इस गुरु को छोड़कर कोई और गुरु करोगे तो बर्बाद हो जाओगे। घरवाले मुझसे बिना बताए तांत्रिकों के चक्कर काटने लगे। कुछ ने सलाह दे दी कि उसे किसी भी तरह से नॉनवेज (माँसाहार) खिला दो। मैं जिस दिन घर जाता उस दिन नॉनवेज जरूर बना रहता, मैं उस दिन खाना नहीं खाता। हद तो तब हो गयी जब यह प्रक्रिया रोज शुरू हो गई। जैसे-जैसे इनकी प्रक्रिया तेज हो रही थी, तमोप्रधान चीजों के प्रति मेरी अनासक्त वृत्ति बढ़ती जा रही

थी। उन्होंने मुझे पैसे देने बंद कर दिये कि पैसे नहीं रहेंगे तो रहेगा कैसे! कई दिन तो मैं भूखा रहा। भूख से तिलमिलाता हुआ जब घर पहुँचता तो नॉनवेज पहले से ही बनाकर रखा रहता। कहाँ जाऊँ, क्या करूँ..? कभी-कभी, जिस भाई ने मुझे कोर्स कराया था वो अपने घर ले जाकर खाना खिला देता था। उस थोड़े-से पवित्र भोजन को ग्रहण कर लगता था जैसे कि मैंने 3-4 दिन के लिए खाना खा लिया हो।

मेरी सहनशीलता चरम पर थी। मुझे दुख था कि इतनी बड़ी सजा एक अच्छे और नेक कार्य के लिए! इतना गलत व्यवहार तो कोई अपने दुश्मनों से भी नहीं करता है। घरवालों को मैं इतना समझाना चाहता था कि जिस दलदल में हम पैदा हुए, उससे निकलने का अब वक्त आ गया है परन्तु इसमें अभी समय था। नष्टोमोहा का पाठ तो मुझे मेरे घरवालों ने ही पढ़ाया। इसके बाद एक भाई की सलाह पर मैं वापी (गुजरात) चला आया नौकरी करने के लिए।

### परीक्षाओं का विकराल रूप

वापी पहुँच कर तो मैं सन्न रह गया। जिस परिस्थिति से भागकर आया था वो पुन: सामने खड़ी थी। जिस भाई की पहचान का सहयोग लेकर मैं यहाँ आया था, वो होटल में काम करता था तथा होटल का ही खाना खाता था। पहले ही दिन जब वो मुझे होटल में खाना खाने ले गया तभी एक आश्चर्यजनक घटना घटी। मैं जैसे ही खाना खाने बैठा, मेरे बाजू में ही एक भाई नॉनवेज लेकर खाने बैठ गया। मैंने खाने से पहले नमक की डिब्बी उठाकर अपने खाने के ऊपर छिड़कना चाहा तो डिब्बी का ढक्कन खुलकर सारा नमक उसी खाने में गिर गया। मैंने खाना छोड़ दिया और होटल से निकल गया। बाद में पता चला कि वहाँ कोई भी बर्तन, कहीं भी प्रयोग कर लेते हैं, क्या वेज, क्या नॉनवेज, कोई फर्क नहीं। वहाँ कई दिन केले खाकर गुजारे। इससे मैं शारीरिक और मानसिक रूप से कमजोर तो हो गया पर हौसलों ने जवाब नहीं दिया था। कुछ महीने बाद मैंने एक मेडिकल कम्पनी में काम करना शुरू किया जहाँ बहुत सारे लड़के-लडकियाँ काम करते थे और माहौल बड़ा विकारी था। फिर मैंने अपना शिफ्ट चेंज कराके रात को कर लिया। परन्तु रात तो रात ही होती है। वहाँ के सारे टपोरी रात को ही काम करने आते थे और मशीन के आगे बड़ी बैल्ट वाली टेबल के अगल-बगल हम बैठते थे। उन लोगों के पास रात काटने का एक ही तरीका था, अश्लील वीडियो लगाकर टेबल पर रख देना ताकि हाथ से काम करते रहें और बुद्धि गंदगी का आनन्द लेती रहे। बीच-बीच में मुझ पर टोंट कसते थे कि कभी-कभी इधर भी ध्यान दिया करो, मजा आयेगा। अब कहाँ भागकर जाऊँ? कई और भी कम्पनियों के चक्कर काटे लेकिन सब मुझे ऊपर से नीचे देखते और कह देते, बाबू! तुमसे काम न हो पायेगा। अच्छी बात यह थी कि उस समय बाबा के साथ मेरा योग बहुत अच्छा था। ऐसा लगता था जैसे बाबा आस-पास ही है और मुझसे निरंतर बातें हो रही हैं। टेबल पर ड्यूटी में जैसे ही बैठता, दिल से निकलता, बाबा, तुम आ गये। बाबा भी कहते, हाँ बच्चे, तुम बिन बाबा का दिल नहीं लगता और मेरे सिर पर हाथ रख देते। इन परिस्थितियों में बाबा का प्यार खूब अनुभव हुआ। अब केवल बाप-बेटे का प्यार नहीं बल्कि बाबा से अच्छी दोस्ती भी हो गयी।

### टूटती हिम्मत को मिला नया सहारा

एक सुबह 3.30 बजे थे, सभी कार्य समाप्त हो गये थे। मैं कम्पनी के ही एक कोने में बैठकर योग कर रहा था, योग कम, रो ज्यादा रहा था। स्वास्थ्य काफी बिगड़ चुका था, शारीरिक और मानसिक कमजोरी तथा पेट में दर्द इतना था कि लगता था कि अभी शरीर छूट जायेगा तथा इलाज के लिए दो पैसे भी नहीं थे। इसी अवस्था में मैं बाबा से रूह-रिहान कर रहा था। तब बाबा ने कई सारी बातें क्लीयर की। बाबा ने कहा, बच्चे, मैजॉरिटी बच्चे, अन्य आत्माओं के स्नेह, सहयोग और पालना के आधार से आगे बढ़ते हैं लेकिन तुम ऐसे बच्चे हो जो जन्म से ही बापदादा द्वारा कराये अनुभवों के आधार से आगे बढ़ रहे हो और बापदादा अन्त तक अनुभवों के आधार से आगे बढ़ाते ही नहीं, उड़ाते रहेंगे। मैंने कहा, बाबा, बातों में फँसा रहे हो और कुछ नहीं। तब बाबा ने कहा, बच्चे, मैं समझ रहा हूँ, तुम्हारी हिम्मत जवाब दे रही है लेकिन विश्वास रखो, सभी अन्धकार मिटने वाले हैं। जिन्होंने 40 वर्षों में जो प्राप्त नहीं किया वो तुम 5 वर्षों में प्राप्त कर सकते हो लेकिन इसके लिए तुम्हें वो सब झेलना पड़ेगा जो उन्होंने 40 वर्षों में नहीं झेला। बाबा ने टूटती हुई हिम्मत को एक नया सहारा दिया। मैंने कहा, बाबा, चलो फिर लगी बाज़ी। इसके बाद जैसे ही पगार मिला, हम दो भाइयों ने मिलकर किराये का कमरा लिया, चूल्हा, बर्तन, खाने-

पीने की सामग्री सब खरीद लाये तथा रोज वापी सेंटर पर मुरली क्लास के लिए जाने लगे। एक नयी शुरूआत हुई।

### घरवालों को मिला ज्ञान

काफी समय के बाद लौकिक पिताजी से फोन पर बात हुई। वो मुझे घर बुलाना चाहते थे। मैंने कहा, घर तो मैं आ जाऊँगा लेकिन उसके पहले आपको एक बार ब्रह्माकुमारीज़ सेंटर पर जाकर सात दिन का कोर्स समझना होगा। अच्छा लगे तो भी ठीक, नहीं अच्छा लगे तो भी ठीक। वैसे तो उनका धर्मसंकट उन्हें रोक रहा था क्योंकि वो विहंगम योग संस्थापक सदाफल देव जी को अपना गुरु मानते थे। उनके लोगों ने पिता जी को कह रखा था कि आप किसी और को गुरु बनाओगे तो बर्बाद हो जाओगे। लेकिन इस धर्मसंकट की बेड़ियों को तोड़ वे 7 दिनों का कोर्स समझने के लिए गये। कोर्स उन्हें बहुत पसंद आया। उन्होंने मुझे फोन किया कि मुझे गर्व है अपने बेटे पर, जिसने मुझे एक नया मार्ग दिखाया बाकी आप जैसे चाहो रह सकते हो, घर आना चाहो तो घर आ जाओ या समर्पित रूप से सेवा करना चाहते हो तो उसके लिए भी मेरी तरफ से बिल्कुल स्वतन्त्र हो। उसके बाद घर के सभी सदस्य ज्ञान में आ गये। कई बार बाबा से मिलन भी मना चुके हैं। मुझे खुशी हुई कि इतने बड़े संघर्ष का बहुत बड़ा रिटर्न दिया बाबा ने।

### दो बड़ी दुर्घटनाएँ

फरवरी में बाबा मिलन के लिए मैं मधुबन आया और यहीं सेवा में ठहर गया। पहली बार ठहरने पर ही बाबा से 6 बार सम्मुख मिलन मनाने का मौका मिला। इसी बीच मेरे से छोटे वाला भाई एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल हुआ। कुछ समय बाद मेरी छोटी बहन का पीलिया की वजह से शरीर छूट गया। लेकिन बाबा की कमाल थी, बाबा पर से निश्चय किसी का नहीं टूटा। कई लोगों ने इसे गुरु बदलने का परिणाम बताया लेकिन किसी के निश्चय को हिला न सके।

इसके बाद भारत के कई सेवाकेन्द्रों पर जाकर ईश्वरीय सेवा की और बाबा को गौरवान्वित किया। अब सब कुछ स्थिर हो गया है। सभी सुखपूर्वक हैं। बाबा ने वो सबकुछ दिया जिसकी हमें जरूरत थी। अब शान्तिवन में सेवाधारी के रूप में सेवारत हूँ। शुक्रिया बाबा, शुक्रिया ड्रामा। शुक्रिया लौकिक और अलौकिक परिवार।

हार कभी न मानना, होना नहीं अधीर।
कर्म से मुख न मोड़ना, बदलेगी तकदीर।। ■■■

## ईशू दादी ... पृष्ठ 20 का शेष भाग ...

एकानामी करना सीखी। दीदी उन्हें सेवा पर साथ ले जाती, पहले दीदी बोलती फिर उन्हें बोलने का अवसर देती। प्रकाशमणि दादी से वे गंभीर रहना सीखी। बाबा कहते, सब कुछ अपने हाथ से करना है, किसी को आधार नहीं बनाना है अत: एक बाबा को आधार बनाकर वे सदा साधन-सुविधा से दूर रह, सादगी का सैम्पल बनी और साक्षीद्रष्टा बन, एकरस स्थिति से अचल-अडोल रहने की प्रेरणा देती रही।

### सहनशक्ति की मूर्ति

बाबा-मम्मा, दीदी-दादी व मोहिनी दीदी-मुन्नी दीदी के संग ईशू दादी ऐसे रही जैसे जिस पात्र में पानी डालो, वह वैसा ही रूप धारण कर समा जाता है। परिस्थिति के अनुरूप ढलने वाली, 'मोल्ड सो रियल गोल्ड' दादी 'सहनशक्ति की मूर्ति' बन, संगठन में सर्व का साथ निभाती रही। वे हर संस्कार की आत्मा से घुलमिल जाती व बातों को सागर सम विशाल हृदय में समाकर, व्यर्थ को सेकण्ड में फुलस्टॉप लगा देती। दादी तो परमात्म ज्ञान-भण्डार की संवर्धक व यज्ञ-भण्डारी की रक्षक थी। मधुबन में आते ही दादी के पास भंडारी देकर सभी निश्चिंत हो जाते। अंतिम दिनों से पूर्व वे बालसुमनों समान खिलखिलाकर हंसती-हंसाती व प्रसन्नता के पुष्प बिखेर देती। धीर-गंभीर होते भी रमणीकता व अंतर्मुखता का अद्भुत संतुलन साध अंतत: वे आध्यात्मिक साधना की पराकाष्ठा को छू गई। बाबा-मम्मा व दीदी-दादी की आज्ञाकारी ईशू दादी जी गंभीरता की प्रतिमूर्ति व ईमानदारी-वफादारी की साक्षात् देवी थी। ऐसी एकनामी-एकानामी की अवतार, शांति की आदर्श मिसाल इशू दादी जी, सत्गुरुवार 6 मई, 2021 को बापदादा की गोद में समा गई व अग्रिम विश्वसेवा हेतु एडवांस पाटी में चली गई, उन्हें हमारा शत् शत् नमन! ■■■

# गंभीरता की देवी ईशू दादी जी

ब्रह्माकुमार खगेंद्र भाई, शांतिवन

ईशू दादी जी से मुझे मां की भासना आती थी। जब से मैं ईश्वरीय ज्ञान में चला, बाबा से रूहरिहान कर कहता था कि 'बाबा, आपने अनाथ से सनाथ बना दिया लेकिन आपकी साकार पालना तो मुझे नहीं मिली।' साकार पालना देने के लिए बाबा ने दादी जी को निमित्त बनाया। दादी जी जब सेवा के लिए बाहर जाती और मैं उनकी गाड़ी चला रहा होता तब उन्हें कुछ भी खाने के लिए देते थे तो वे सबसे पहले मेरे मुंह में खिलाती थी। मुझ सौभाग्यशाली आत्मा को बाबा ने दादी जी की ऑलराउंड सेवा करने का चांस दिया। जब दादी जी द्वारा दी गई कोई भी सेवा करके, आकर बताता कि मैं सेवा करके आ गया हूं तो दादी जी मुझे एक मां की तरह अपने गले लगा लेती थी और मेरे माथे पर प्यार से हाथ घुमाती थी। मुझे कोई ऊंची आवाज में बोलते थे तो दादी जी कहती, 'मेरे भाई से प्यार से बोलो।' दादी जी छोटी-बड़ी बातों पर मेरा अटेंशन खिंचवाती थी और मां की तरह हर बात सिखाती थी।

### जितनी प्यारी, उतनी न्यारी

दादी जी हमें प्यार करती थी परंतु कहती थी, 'आप सब तो मेरे सेवासाथी हो, बाबा ने आप सबको मेरी सेवा के निमित्त रखा है', ऐसा कहते न्यारी भी रहती थी।

### गंभीरता और रमणीकता का बैलेंस

दादी जी जितनी गंभीर रहती थी उतनी ही रमणीक भी थी। हमें दादी जी बहुत हंसी की बातें सुनाती थी और बहलाती भी थी लेकिन जब भी दादी जी किसी भी मीटिंग में जाकर आती और हम पूछते कि दादी जी, आज मीटिंग में क्या-क्या हुआ? तो दादी जी गंभीरता की देवी बनकर कहती थी, आपके काम की कोई बात नहीं थी।

दादी रुकमणि जी हमें सुनाती थी कि ईशू दादी तो पहले से ही गंभीरता की मूर्ति बन कर रही, कोई भी बात होती थी तो ईशू दादी बाबा को ही बताती थी। बाबा के अव्यक्त होने के बाद, बाबा ने यज्ञ संभालने की जिम्मेवारी दीदी-दादी को दी, तब दादी प्रकाशमणि को संकल्प आया कि हम तो यज्ञ के बारे में कुछ नहीं जानते। तब दीदी-दादी जी ने संदेशी को बाबा के पास वतन में भेजा और कहा कि बाबा से पूछ कर आओ, यज्ञ में क्या है, क्या नहीं, हम तो कुछ भी जानते नहीं हैं। तब बाबा ने संदेश भेजा कि दीदी-दादी को कहना, ईशू बच्ची को सदा अपने साथ रखें, वह सब कुछ जानती है। तब से ही दीदी-दादी ने ईशू दादी को अपने साथ ही रखा।

### एकनामी और इकॉनामी की अवतार

दादी जी एकनामी और इकॉनामी का पूरे विश्व में उदाहरण थी। दादी जी की रग-रग में बाबा समाया हुआ रहता था। दादी जी यज्ञ के एक-एक पैसे की बहुत वैल्यू करती थी। दादी जी ने अपने ऊपर कुछ भी खर्च नहीं किया और ना ही अपने पास कुछ भी रखा। गंभीर होने के कारण उन्होंने अपने संकल्प, श्वास को भी व्यर्थ नहीं गंवाया, उनकी भी इकॉनामी करके स्वयं को संपूर्ण बनाया। दादी जी कहती थी, मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई, मैं बाबा की, बाबा मेरा। सदा बाबा की याद में अखंड रही।

### मास्टर मुरलीधर

शिवबाबा ने ब्रह्माबाबा के द्वारा जो भी साकार मुरलियाँ चलाई, वे दादी जी के हस्तों द्वारा लिखी गई।

बाबा दादी को कहते थे, 'बच्ची, आप नाश्ता करो या ना करो लेकिन मम्मा और दादियाँ, जो दूसरे स्थान पर रहते हैं, उनके पास मुरली टाइम से पहुंचनी चाहिए।' दादी कहती थी, 'जी बाबा' और शॉर्टहैंड में लिखी मुरली को विस्तार में लिखकर, दादी चंद्रमणि जी के साथ साइकिल पर बैठकर 10:00 बजे मुरली पोस्ट करके आती थी और वह मुरली टाइम पर दूसरे स्थान पर पहुंच जाती थी।

### खुशी का पावरफुल औरा

एक बार मनमोहिनीवन परिसर में विदेशी भाई-बहनों की रिट्रीट चल रही थी, वहां पर दादी जी को सब से मिलने के लिए बुलाया गया। जैसे ही दादी जी वहां पर पहुंची, भाई-बहनें खुश हो गए। फिर दादी जी से प्रश्न-उत्तर का सेमिनार चला। सभी का प्रश्न यही था कि 'दादी जी, आप सदा ही इतनी खुश कैसे रहती हो?' तब दादी जी ने बड़े सरल शब्दों में उत्तर दिया कि 'बाबा मिला तो और क्या चाहिए! मैं सदा इसी खुशी में नाचती रहती हूं, मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा ना कोई। आप सभी इस मंत्र को पक्का कर लो तो सदा ही खुशी में नाचते रहेंगे।' दादी जी का खुशी का औरा बहुत ही पावरफुल था। जब भी दादी जी किसी भी सभा में जाती तो वहां पर खुशी की लहर फैल जाती।

### संतुष्टता की देवी

दादी जी स्वयं सदा संतुष्ट रहती और उनसे मिलने जो भी भाई-बहनें आते, उनके भी संकल्पों को कैच करके उन्हें स्थूल या सूक्ष्म गिफ्ट देकर संतुष्ट कर देती थी, सबकी झोली खुशियों से भर देती थी।

### प्यूरिटी के साथ रॉयल्टी

दादी जी जितनी ही पवित्र थी, उतनी ही रॉयल थी। जैसे ब्रह्मा बाप में प्योरिटी व रॉयल्टी के संस्कार थे, उसी प्रकार दादी जी में ईश्वरीय कुल के रॉयलपन के संस्कार थे। उनके देखने, बोलने, सुनने, हंसने, खाने – हर कर्म में प्योरिटी की रॉयल्टी झलकती थी। दादी जी कम बोलते थे लेकिन जो भी बोलते थे, वरदान के रूप में बोलते थे। उनके जीवन में व्यर्थ बोल का अंश मात्र भी नहीं था।

### सदा स्वमान की सीट पर सेट

दादी जी सदा स्वमान में रहती थी और बड़े-छोटों को सदा सम्मान देती थी। स्वमान में स्थित रहने के कारण मान-शान मिलने और ना मिलने पर भी एकरस और सदा खुश रहती थी।

### यज्ञ की महालक्ष्मी

दादी जी यज्ञ का स्थूल धन संभालने में जितनी निपुण थी, उतनी ही ज्ञानधन से भी सदा संपन्न रही। जबसे दादी जी को बाबा ने यज्ञ की भंडारी संभालने की जिम्मेदारी दी, तबसे आज तक यज्ञ में किसी भी चीज की कमी नहीं हुई। जहां-जहां दादी जी के पांव सेवार्थ पड़े वहां पर भी किसी भी बात की कमी नहीं रही।

### प्रकृतिजीत

दादी जी 85 वर्षों की आयु तक अपना हर कार्य स्वयं ही करती थी। दादी जी ने अपने शरीर को ठीक रखा। अंत तक भी दादी जी के बत्तीस के बत्तीस दांत थे। दादी जी के शरीर में हर्निया के सिवाय और कोई बीमारी नहीं थी। जब वे दादी कॉटेज में रहती थी तब जो भी भाई-बहनें यज्ञसेवा देते थे उसे लेकर अकाउंट ऑफिस तक पैदल ही पूरे दिन में 8-10 चक्कर लगाती थी, जिससे उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता था। अभी 93 वर्ष की आयु में भी दादी जी कहती थी कि चलो बाहर चक्कर लगाकर आते हैं, तो हम दादी जी के साथ सोलार में जाते थे, वहां वे एक किलोमीटर तक पैदल सैर करती थी।

एक बार महाराष्ट्र के वर्धा शहर में दादी जी एक प्लॉट का उद्घाटन कर रही थी। वहां से 500 मीटर की दूरी पर भारी बरसात हो रही थी और जहां पर प्रोग्राम चल रहा था वहां एक बूंद भी नहीं थी। प्रोग्राम समाप्त होने के बाद जब सारा सामान भी समेट लिया गया तब उस स्थान पर भारी बरसात हुई, इससे पता चलता है कि दादी जी प्रकृतिजीत थी। दादी जी हर आत्मा की शुभेच्छा जान जाती थी और उस अनुसार उनके मुख से बाबा, महावाक्य उच्चारण करवाते थे जिससे मिलने वाले भाई-बहनें पूर्ण संतुष्ट हो जाते थे।

### दृष्टि और टोली से असंभव कार्य भी संभव

बात विशाखापट्टनम एयरपोर्ट की है। हमारे पास सामान ज्यादा था। जब हम एयरपोर्ट पहुंचे और सामान का वजन कराया तो 35 किलो ज्यादा निकला। वजन मापने वाली स्टाफ ने मैनेजर को बुला लिया। मैनेजर ने कहा, 35 किलो ज्यादा सामान के लिए सोलह हजार भरने पड़ेंगे। हमने कहा, सोलह हजार तो नहीं देंगे। तब मैनेजर ने कहा, दस हजार ही दे दो। तभी साथी भाई के कहने पर वहाँ उपस्थित स्टाफ को दादी जी से दृष्टि व टोली दिलाई गई। इसके बाद मैनेजर भाई हमारे पास आया और कहा कि जो ज्यादा सामान है वह मुझे दे दो। वह खुद ही सारा सामान प्लेन में रखकर आया।

### अहम भाव की कोई जगह नहीं थी

सब विशेषताओं और गुणों से संपन्न होते हुए और इतने बड़े पद पर रहते हुए भी दादी जी के जीवन में कभी अहम भाव नहीं आया। उन्होंने कभी यह नहीं कहा कि मैं अकाउंट की हेड हूं और ना कभी यह कहा कि मैं ब्रह्माकुमारीज की संयुक्त या अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका हूं। एक बार, एक भाई दादी जी से मिलने आए और उन्हें अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका बनने की बधाई दी। फिर पूछा, दादी जी, क्या आप यह जानते हो? दादी जी ने कहा कि 'मैं यह जानती हूं कि मैं बाबा की बच्ची हूं, इससे बढ़कर और कोई पोस्ट-पोजिशन नहीं है।'

### स्वयं हल्की रहती और सेवासाथियों को हल्का रखती

दादी जी यज्ञ की भंडारी संभालते हुए भी सदा हल्की रहती थी और अपने सेवासाथियों को भी हल्का रखती थी। जब भी अकाउंट ऑफिस में कोई भी बात होती थी तो दादी जी तुरंत कहती थी, 'आप सबको सदा याद रखना है कि यह बाबा का यज्ञ है, इसे स्वयं बाबा चला रहा है, हम सब तो निमित्त मात्र हैं।' ऐसे कहकर स्वयं भी हल्की रहती और सेवासाथियों को भी हल्का कर देती थी।

### सेवा में एक्यूरेसी

दादी जी 93 वर्ष की आयु में भी अकाउंट की सेवा बहुत एक्यूरेट करती थी। भाई-बहनें जो भी अमानत दादी जी के पास लेकर आते थे, तो दादी जी स्वयं पहले चेक करती थी, बाद में मुझे चेक करने के लिए देती थी। यदि किसी चेक पर साइन नहीं किया हो या डेट नहीं डाली हो तो उन सब भाई-बहनों को बताती थी और समझानी देती थी कि हर कार्य बाबा की याद में करेंगे तो गलती नहीं होगी।

### बालक और मालिकपन का बैलेंस

दादी जी हर समय कहती थी कि 'मैं बाबा की छोटी बच्ची हूं।' लेकिन, जब भी दादी जी को यज्ञ के लिए चेक या कैश दिया जाता था और किसी कारण से वो दादी जी से वापस मांगते तो दादी जी कहती, 'मैं क्यों वापस करूं? यह तो बाबा के यज्ञ का है।' तुरंत मालिक बनकर उसको संभालती थी और फिर मुझे कहती थी कि जाओ, इसे जमा कर आओ।

### बाबा से दादी जी को मिला विशेष वरदान

वर्ष 2014 में जब दादी जी स्टेज पर अव्यक्त बापदादा से मिल रही थी तो बाबा ने कहा कि 'आप बहुत गुप्त रह चुकी हो, अब थोड़ा प्रत्यक्ष हो जाओ।' तभी बाबा ने मुझ आत्मा को दादी जी की सेवा के निमित्त बनाया। मैं वर्ष 2009 से ही दादी कॉटेज में सेवा के लिए आया करता था। मैं आर्मी में सर्विस करता था। निमित्त भाई ने मुझे दादी जी की सेवा में समर्पित करवाने की बात कही, तो मैं सहज ही मान गया। मैं जब भी सेवा में आता था तो दादी जी की ही गाड़ी चलाता था। तब दादी जी बार-बार मेरे से पूछती थी कि आप आर्मी छोड़कर कब पूरी रीति से सेवा में आएंगे? मैं कहता, 'दादी जी, जब आर्मी से छुट्टी मिल जाए।' इस प्रकार वर्ष 2014 में दादी जी की सेवा में पूरी तरह समर्पित हो गया।

बाबा ने छोटेपन में ही दादी के अंदर हर विशेषताएं और गुण कूट-कूट कर भर दिए और दादी जी को विशेष आत्मा बना दिया। ऐसी विशेष आत्मा की सेवा का चांस बाबा ने मुझ आत्मा को दिया इसलिए मैं बाबा और दादी जी का कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूं। ■■■

# दुआओं का खजाना

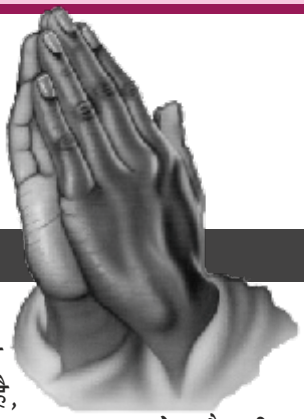

ब्रह्माकुमारी पूजा, नडियाद (गुजरात)

आज के भौतिकवादी समय में मनुष्य अपने बहुमूल्य समय, शक्ति एवं धन को दुनियावी सुख के साधनों की प्राप्ति में लगा रहा है। वह धन-दौलत और नाम-मान-शान कमाने की अंधी दौड़ में शामिल है। इस प्रक्रिया में वह अपने पास बहुत कुछ जमा कर भी लेता है किंतु फिर भी उसके पास हल्कापन, खुशी, आनंद, प्रेम, शान्ति आदि नहीं हैं। स्थूल वस्तुएँ होते हुए भी दुआओं के सूक्ष्म खजाने से झोली खाली ही रह जाती है जिसकी तरफ उसका ध्यान तक नहीं है।

## दुआएँ मांगी नहीं, अर्जित की जाती हैं

दुआयें सूक्ष्म होती हैं जिनको माँगा नहीं जा सकता अर्थात् जो माँगने से नहीं मिलती बल्कि अपने श्रेष्ठ चलन और कर्मों के द्वारा अर्जित की जाती हैं। वरदान, आशीर्वाद और दुआओं का उद्गम स्थल दिल है अर्थात् दुआयें दिल से निकलती हैं, जो किसी भी व्यक्ति के लिए कारगर सिद्ध होती हैं। कहा जाता है, दुआयें मात्र दुआयें नहीं हैं, समय पड़ने पर ये दवा का भी काम करती हैं। यही कारण है कि जब कोई रोगी बहुत गम्भीर हो जाता है तो कभी-कभी डॉक्टर लोग भी कह देते हैं कि अब दवा असर नहीं कर रही, दुआओं का ही भरोसा है। ऐसे में व्यक्ति दुआओं की ओर ताकता है किंतु दुआएँ कोई भौतिक चीजें तो नहीं हैं जो किसी से खरीदी जा सकें। इन्हें तो जीवनभर के पुरुषार्थ से कमाना होता है। किसी व्यक्ति, वस्तु, साधन आदि को हम तक पहुँचने में देर हो सकती है लेकिन दुआयें अगर हमारे खाते में जमा हैं तो तुरंत उनका लाभ मिल जाता है। कई बार किसी दुर्घटना में कुछ लोग काफी हद तक बच जाते हैं, तब कहा जाता है, दुआयें काम कर गई, जादू हो गया, नहीं तो बच पाना असम्भव था। दुआओं का असर जीवन के मुश्किल पलों को आसान-सहज-सरल कर देता है।

दुआयें लेने और देने से जीवन में खुशी आती है, सन्तुष्टता बढ़ती है, भरपूरता का अनुभव होता है। जीवन रूपी यात्रा सहज लगने लगती है और मेहनत से मुक्ति हो जाती है। साधारणतया जब कोई वस्तु किसी को दी जाती है तो वह देने वाले से, लेने वाले के पास पहुँच जाती है परन्तु दुआ दोनों के पास बनी रहती है; दोनों के सुख, शान्ति, प्रेम, खुशी को बढ़ा देती है, दोनों को लाभान्वित करती है।

## मास्टर दाता बन देते जाओ

दुआओं के खाते को बढ़ाने की विधि है श्रेष्ठ कर्मों की पूँजी जमा करना, सर्व के प्रति शुभभावना एवं शुभकामना रखना, नि:स्वार्थ भाव से कर्म करना तथा दिल में सच्चाई-सफाई रखना। शिवबाबा कहते हैं, बच्चे, अपना जमा का खाता चेक करो। इस एक जन्म का जमा ही भविष्य 21 जन्मों तक काम आयेगा अत: कोई भी घड़ी जमा किये बिना ना जाये। जो भी आपके सम्पर्क में आये उसे कुछ न कुछ अवश्य दें। हर आत्मा के प्रति आत्मिक दृष्टि रखना भी उसको दुआ देना है इसलिये मास्टर दाता बन देते जाओ। सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें देना और दुआयें लेना। हर कर्म परमात्मा पिता की स्मृति में रहकर किया जाये तो इंसान के साथ-साथ भगवान की भी दुआयें ली जा सकती हैं। यह सहज सेवा है स्वयं की भी और सर्व की भी।

दुआयें सबको दें, दिल से दें, बिल्कुल कंजूसी न करें। गरीब-अमीर, बच्चा-बूढ़ा, अपना-पराया, रोगी-निरोगी कोई भी हो, कैसी भी स्थिति में हो, मन की दुआयें निरंतर दी जा सकती हैं, जरूरत है बड़े दिल की।

इस अमूल्य जीवन का कुछ समय दुआओं का दिव्य खजाना जमा करने में लगायें और खुशियों से भरपूर बन जाएँ। दुनिया में सबसे ज्यादा रफ्तार दुआओं की है जो जबान तक पहुँचने से पहले ईश्वर तक पहुँच जाती हैं। ■■■

# सहन करो, शील बढ़ाओ

ब्रह्माकुमारी प्रियंका, हरि नगर, नई दिल्ली

दिव्य गुणों में एक महान गुण है सहनशीलता। किसी भी उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सहन तो करना ही पड़ता है। हम सब जानते हैं कि ये गुण बहुत बड़ा है परन्तु केवल मानने से क्या होगा? गुण तो धारण करने की चीज़ है। सहन करने से ही तो हमारी शक्ति भी बढ़ेगी और हमारा शील अर्थात् हमारी पवित्रता भी। तभी तो सहन करने वाले को सहनशील कहा जाता है।

## सहन करने से शील कैसे बढ़ता है?

ये ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध आदि अपवित्रता में ही तो गिने जाते हैं। किसी कष्टकारी परिस्थिति को सहन नहीं करने से क्रोध आदि उत्पन्न होते हैं। स्पष्ट है कि सहन करने से ही पवित्रता अथवा शील बढ़ेगा और इससे आत्मा की शक्ति भी बढ़ेगी। सहन करने से खुशी भी बढ़ती है। किसी की कड़वी बातें सहन कर लेने से झगड़ा समाप्त हो जाता है और उलझनें मिट जाती हैं। जब कोई व्यक्ति किसी भी बीमारी को या कड़वे वचनों को सहन कर लेता है, तो सभी के मुख से उसके प्रति 'शाबाश', 'आफ़रीन', 'वाह-वाह' शब्द निकलते हैं।

## सहनशील मनुष्य के लक्षण

सहनशील मनुष्य के लक्षण ये हैं कि यदि कोई उससे रूखा बोलेगा, उसकी निंदा करेगा या उसे कोई शारीरिक रोग भी होगा, तो भी उसका चेहरा खिला हुआ अर्थात् हर्षयुक्त होगा, उस पर मुर्झाहट का चिन्ह नहीं होगा। भाव-स्वभाव के टकराने की परिस्थिति आएगी, तो भी उसके वचनों से निश्चिंतता प्रकट होगी। उसके नयनों से ईश्वरीय ज्ञान के नशे की झलक आएगी। उसकी चलन से ऐसा लगेगा जैसे कोई बड़ी बात नहीं हुई।

## सहनशीलता का अर्थ

सहनशीलता की परिभाषा यह है कि दुख या अशांति पैदा करने वाली परिस्थितियाँ जब मनुष्य के सामने आएँ, तो मन में दुख की लहर रिंचक भी पैदा न हो। उसके पुरुषार्थ में, योगाभ्यास में, अन्य आत्माओं के प्रति शुभभावना में कोई भी कमी न आए।

## सहन करने के लिए चाहिए शक्ति

सहन करने के लिए शक्ति चाहिए। अभी तो आत्मा निर्बल हो चुकी है, उसे शक्ति तो सर्वशक्तिमान परमात्मा से ही मिलेगी इसलिए परमात्मा से आत्मा का योग होना चाहिए। दूसरा, अपने आप को यह समझाना चाहिए कि छेनी और हथौड़े की चोट सहने से पत्थर भी पूजनीय मूर्ति बन जाता है। इसी प्रकार ज्ञानी मनुष्य, कठिनाइयाँ तथा विघ्न सहन कर करके चेतन देवता, नर से नारायण अथवा पत्थर से पारस बन जाता है। यदि कोई दस व्यक्तियों के सामने हमारा अपमान करे, तो हमें याद रखना चाहिए कि यह पूर्व जन्म का कर्मलेखा है, यदि इसे मैं स्वयं सहन नहीं करूँगा तो और कौन करेगा? अभी सहन नहीं करेंगे, तो धर्मराज-पुरी में करना पड़ेगा। अभी सहन करेंगे, तो भविष्य में भी इसका फल उच्च पद के रूप में मिलेगा।

## मुश्किलों को सहन करोगे तो 'मलूक' बनोगे

आपने संत नामदेव का किस्सा तो सुना ही होगा। कहते हैं कि वे प्रतिदिन प्रात: जब गंगा नदी से स्नान करके लौटते थे तो उन पर एक पठान ऊपर से पान थूक देता था। वे फिर लौटकर स्नान कर आते थे। काफी समय तक वह पठान अपने इस बुरे व्यवहार की पुनरावृत्ति करता रहा। एक दिन तो ऐसा हुआ कि उसने छ: बार संत नामदेव पर पान थूका और वे छ: बार नहाकर आए परंतु उन्होंने अपने मुख से कुछ बोला नहीं। आखिर उस पठान को संत नामदेव जी के क्षमाशील और सहनशील स्वभाव पर आश्चर्य भी हुआ और स्वयं के स्वभाव पर लज्जा भी। इस घटना के पश्चात्, पठान ने अपने बुरे स्वभाव को त्याग दिया और वह संत नामदेव जी का प्रशंसक बन गया।

अंत में यही कहना चाहूँगी –

ज़िंदगी जीना आसान नहीं होता,
बिना संघर्ष के कोई महान नहीं होता,
जब तक न लगे हथौड़े की चोट,
तब तक पत्थर भी भगवान नहीं होता। ■■■

# रावण की बेटी चिन्ता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

चिन्ता एक सूक्ष्म मनोविकार है जिसकी उत्पत्ति इच्छाओं से होती है। इच्छाएँ मनुष्य को हँस कर जीने नहीं देतीं और मनुष्य इच्छाओं को मरने नहीं देता। भिक्षा-पात्र तो भरा जा सकता है लेकिन इच्छा-पात्र कभी भी भरा नहीं जा सकता। इच्छाएँ दोधारी तलवार की तरह हैं क्योंकि इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो क्रोध बढ़ता है और यदि इच्छाएँ पूरी होती हैं तो लोभ बढ़ता है। यदि इच्छा उठनी काफी कम हो जाए तो वैराग्य बढ़ता है। यह सांसारिक वैराग्य एक परमपिता परमात्मा से राग बढ़ाता है और चिन्ता मिटाता है। चिन्ता का विलोम है आश्वस्त। भविष्य या भावी के प्रति आश्वस्त होकर ही वैराग्य आ सकता है। आश्वस्त वही रह सकता है जिसके कर्म अच्छे हों, जो विवेकवान-गुणवान हो और जिसे अपनी क्षमताओं पर भरोसा हो। आश्वस्त मनुष्य ही खुश रह सकता है। सबसे कठिन काम है सबको खुश रखना और सबसे आसान काम है सबसे खुश रहना। आज मनुष्य की सोच यह है कि 'मेरी चिन्ता का कारण दूसरा व्यक्ति है' जबकि कारण उसकी खुद की सोच, खुद का दृष्टिकोण व खुद के कर्म हैं।

## चिन्ता, अनुसरण करती है व्यर्थ चिन्तन का

महान चिन्तक आर्थर शॉपेनहॉवर के अनुसार, 'हर खुशी के पहले कुछ क्रियाशीलता रही होती है।' क्रियाशीलता अर्थात् कर्म। खुशी सद्कर्म का अनुसरण करती है। उसी प्रकार, 'हर चिन्ता के पहले कुछ व्यर्थ चिन्तन चला होता है।' चिन्ता, व्यर्थ चिन्तन का अनुसरण करती है। चिन्ता की शुरूआत किसी क्षुद्र, महत्वहीन बात से होती है जिसका कि बहिष्कार या निष्कासन किया जा सकता था। चिन्ता की विशेषता है कि इसे जरा-सा आने या बैठने का मौका मिले तो यह पूरे पैर पसार कर मालिकपना दिखाने लगती है। एक-दो कौड़ी की बेकार-सी बात पूरे भेजे को खराब कर देती है। चिन्ता उस (पौराणिक पात्र) दुर्योधन की तरह है जिसे कोई नहीं समझा सकता है। दुर्योधन कभी खुश नहीं रहता था।

## उम्मीदें खुद से रखो, और से नहीं

परेशान रहने से कल की मुश्किल दूर नहीं होती बल्कि आज का सुकून भी चला जाता है। खुश रहने का एक ही मंत्र है, उम्मीदें सिर्फ अपने से रखो, किसी और से नहीं। हंस मरते हुए भी गाता है और मोर नाचते हुए भी रोता है। जिन्दगी का फलसफा यही है कि दुखों वाली रात में नींद नहीं आती और खुशी वाली रात में भला कौन सोता है। जिसे जितनी ज्यादा खुशी, उसे उतनी कम नींद की आवश्यकता। नींद शारीरिक रख-रखाव के लिए जरूरी है परन्तु खुशनुमा व्यक्ति का शरीर स्वत: दुरूस्त रहता है। नवप्रभात, नवयुग आने वाला है, इसकी आश्वस्तता, चल रही कलियुगी अन्धियारी रात को भी खुशनुमा करती है लेकिन मात्र उनकी, जो राजयोगी हैं।

## वर्ल्ड हैप्पीनेस डे

विश्व में चिन्ता बढ़ रही है और खुशहाली घट रही है। प्रतिवर्ष 20 मार्च को वर्ल्ड हैप्पीनेस डे मनाया जाता है और उस दिन संयुक्त राष्ट्र अपनी वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट जारी करता है। इस वर्ष 156 देशों की सूची में भारत 140वें स्थान पर रहा है जो कि सरकार के लिए चिन्ता की बात होनी चाहिए। विश्व के पांच सबसे खुशहाल देशों में फिनलैंड, डेनमार्क, नॉर्वे, आइसलैंड और नीदरलैंड्स क्रमवार रहे हैं। सूडान 156 वें स्थान पर है और उसे सबसे चिन्ताग्रस्त देश घोषित किया गया है।

प्रथम 10 खुशहाल देश वो हैं जहाँ नास्तिकता का बोलबाला है। ब्रिटेन में कराए गए सर्वेक्षण के अनुसार, दुनिया में सबसे ज्यादा खुश फूल बेचने वाले या माली होते हैं जबकि बैंक में सेवारत कर्मचारी सबसे ज्यादा चिन्ताग्रस्त होते हैं। फूलों का आदान-प्रदान दिल खुश करता है जबकि बैंक में पैसे का आदान-प्रदान दिमाग को परेशान करता है। फूल मर कर भी खुश कर जाते हैं और मरने से बचाने वाला पैसा अपराध-जगत व कोर्ट-कचहरी के कारोबार का सबसे बड़ा कारण है। यदि जीवन में खुशहाली हो तो नास्तिकता बढ़ती है और मनुष्य ईश्वर का ध्यान नहीं करता। यही कारण है कि सतयुग में सम्पूर्ण खुशहाली होने के कारण वहाँ ईश्वर से सभी अनजान रहते हैं। आज का चिन्ताग्रस्त भारत ही भविष्य में विश्व का सबसे खुशहाल देश बनता है।

## चिन्तामुक्ति से जीवनमुक्ति

खुशी और चिन्ता जीवन के दिन और रात के समान हैं। चिन्ताग्रस्त मनुष्य का दिन भी काली रात के समान है और खुश व्यक्ति की रात भी दिन के समान है। एक बार बादशाह अकबर ने बीरबल से कुछ ऐसा लिखने को कहा जिसे खुशी में पढ़ो तो चिन्ता होती है और चिन्ता में पढ़ो तो खुशी होती है। तब बीरबल ने लिखा, 'ये वक्त भी गुजर जाएगा।' जो अलबेलेपन में वक्त गुजारते रहते हैं उन्हें खुशी मिलती नहीं और जो वक्त के साथ चलते रहते हैं उन्हें चिन्ता होती नहीं। वक्त के साथ चलना अर्थात् वक्त को सद्कर्मों से सफल करना। सतयुग व त्रेतायुग का खुशहाल समय ब्रह्मा का दिन कहा जाता है और द्वापर व कलियुग का चिन्तामय समय ब्रह्मा की रात कही जाती है। जो घोर चिन्ता में नर्कमय जीवन भुगत रहे हैं, वे यकीन करें कि बस यह रात गुजरने वाली है। परन्तु, विडम्बना यह है कि चिन्ताग्रस्त व्यक्ति किसी पर यकीन नहीं करता, यहां तक कि खुद की क्षमताओं पर भी नहीं क्योंकि वह अज्ञानी है। कलियुग के अन्तिम प्रहर में मनुष्यों को अपने जीवन की रात को दिन में बदलने का ज्ञान स्वयं परमपिता परमात्मा शिव से प्राप्त होता है। जो इस पर यकीन नहीं करते, वे यकीनन चिन्ताग्रस्त हैं। कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग नामक चिन्तामुक्ति का

यह ऐसा समय है जिससे जीवनमुक्ति प्राप्त होती है।

## वाद-विवाद और विचार-विमर्श

वाद-विवाद (Arguments) और विचार-विमर्श (Discussions), वार्ता के ये दो तरीके हैं। वाद-विवाद होता है कि कौन सही है और विचार-विमर्श होता है कि क्या सही है? वाद-विवाद से चिन्ता का जन्म होता है, तो विचार-विमर्श से किसी चिन्ता का दफन होता है। समझदार व्यक्ति कभी वाद-विवाद में नहीं उलझता। उसका तो सीधा-सा सिद्धान्त है कि आप मेरे जीवन का हिस्सा बनना चाहते हैं तो मेरा दरवाजा सदा खुला है और आप यदि मुझे नापसन्द करते हैं तो भी मेरा दरवाजा खुला है, आप जा सकते हैं, आप दरवाजे में ही खड़े होकर ट्रैफिक को बाधित न करें। आने-जाने वाले लोग मेरे जीवन के शृंगार हैं, न कि चिन्ता के साधन। यदि हर व्यक्ति सुख ही देता रहे तो हलचल विहीन नीरस जीवन भी भला कोई जीवन है? चिन्ता-दाता और सुखदाता का आवागमन लगा रहे, यही तो जीवन की विविधता व रोचकता है, जो किसी पुरुषार्थी से अविरल प्रगति कराती रहती है। प्रतिकूलता में किये गये संघर्ष से प्राप्त सफलता की खुशी व मुस्कान कुछ अलग ही होती है।

## चिन्तन से खुशहाली, चिन्ता से बदहाली

मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ मन:स्थिति है 'मनमनाभव:' होने की अर्थात् एक परमपिता की याद में लवलीन होने की। इसके विपरीत, आज का मनुष्य अनमनाभव: अर्थात् चित्त से खिन्न और व्यर्थ संकल्प से 'गमगीन' होकर जीवन ढोता है क्योंकि उसे अपने परमपिता का ज्ञान नहीं। अनमना होने से उदासी आती है, उदासी से व्याकुलता और व्याकुलता से चिन्ता का जन्म होता है। चिन्ता फिर जीवन की खुशी व उत्साह को छीन लेती है।

हमेशा मनमनाभव: होकर नहीं रहा जा सकता लेकिन यह तो किया ही जा सकता है कि मनुष्य समय प्रति समय अपने मन की दशा व दिशा पर चिन्तन करे, उसे पुन:-पुन: दिशाहीनता से निकाल कर प्रगति व समृद्धि के पथ पर ला खड़ा करे। चिन्तनगामी मन खुशहाली लाता है अन्यथा चिन्तामय मन से बदहाली ही प्राप्त होती है। गौतम बुद्ध ने एक चिन्ताग्रस्त श्रद्धालु से आने का कारण पूछा तो श्रद्धालु ने कहा कि 'मैं खुशी चाहता हूँ।' बुद्ध ने मुस्करा कर कहा कि पहले तुम मैं का त्याग करो क्योंकि यह अहंकार का प्रतीक है। फिर तुम चाह का त्याग करो क्योंकि 'चाह' (इच्छाएँ) जीवन की बाधाएं और चिन्ता की जनक हैं। अन्त में तुम्हारे पास खुशी ही बचेगी, जिसे तुम बाहर ढूँढ़ रहे हो। किसी को चाहना या तो प्रेम है या मोह परन्तु किसी से चाहना, खुदपरस्ती या खुदगरजी है जिससे चिन्ता तो पैदा हो सकती है, खुशनसीबी नहीं।

## सिर का बोझ और मन का बोझ

एक बादशाह अपने रथ पर जा रहा था। वह धार्मिक प्रवृत्ति का था। वह फकीर, संत, महात्माओं आदि का बहुत सम्मान करता था। उसने देखा कि एक फकीर सिर पर पोटली उठाए पैदल जा रहा है। बादशाह ने रथ रुकवाया और फकीर को अपने रथ पर बैठा लिया। बादशाह ने देखा कि रथ पर बैठे हुए भी फकीर अपनी पोटली को सिर पर ही रखे हुए था। बादशाह ने उससे कहा कि भाई, तुम बिल्कुल पागल लगते हो। रथ पर बैठ कर भी सिर का बोझा नहीं उतार रहे हो। फकीर बोला, आपने भी तो चिन्ताओं का बोझा सिर पर उठा रखा है, उसे परमात्मा को दे कर हल्के क्यों नहीं हो जाते! मैं तो कुटिया में जा कर इस पोटली को उतार दूंगा परन्तु आप तो चिन्ताओं की गठरी को चौबीसों घंटे ढोते हो, पागल कौन है, इसे अब आप विचारो। बादशाह ने नतमस्तक होकर उस फकीर को अपना गुरु बना लिया। रात्रि में शय्या पर चिन्ताग्रस्त रहते हुए लेटना अपनी पीठ पर बोझ बांध कर सोने के समान है। आज का व्यक्ति कौरवों का संग करने वाला भीष्मपितामह है, श्रीकृष्ण का संग करने वाला अर्जुन नहीं। कोई शय्या पर है या भीष्मपितामह की तरह सर-शय्या पर है, यह मात्र उसके कर्मों पर ही निर्भर नहीं करता बल्कि संग और अन्न कैसा है, उस पर भी निर्भर करता है। मिट्टी से पैदा हुआ शुद्ध अन्न दुर्योधन के संग से अशुद्ध हो गया और उसने भीष्मपितामह के रक्त को भी अशुद्ध कर दिया। अंत में भीष्मपितामह का यह रक्त निकल कर मिट्टी में जब मिला, तब ही भीष्मपितामह अपनी भोगना से मुक्त हुए। कौरवों का संग रौरव-नरक दिलाता है, तो सुदामा का अन्न महल दिलाता है।

## गुण जड़, विकार गतिशील

आत्मिक गुणों की सटीक व्याख्या विज्ञान भी कर सकता है। गति-विज्ञान (Dynamics) और स्थिति-विज्ञान (Statics), विज्ञान की ये दो शाखाएं हैं। आधाकल्प आत्मा के मौलिक गुण 'गति-विज्ञान' के अन्तर्गत गतिशील अर्थात् क्रियान्वित रहते हैं और द्वापरयुग से मौलिक गुण आत्मा में 'स्थित' तो रहते हैं परन्तु (Static) गतिहीन या जड़ हो जाते हैं। आज गुण जड़ हो गए हैं और विकार गतिशील हो कर चिन्ता का माहौल बना रहे हैं। चिन्ता से अकर्मण्यता आती है जबकि गुणों की गतिशीलता श्रेष्ठ कर्म कराती है। श्रेष्ठ कर्म से ही सुख, आनन्द व प्रसन्नता प्राप्त होती है।

## सोने की चैन या चैन से सोना

आज की पीढ़ी इकट्ठा करने के लिए जी रही है, पहले की पीढ़ी इकट्ठा रहने के लिए जीया करती थी। आज प्रेम की पूंजी सिमट गई है और संबंध बिखर गए हैं जबकि पहले तीन-चार पीढ़ियां एक ही छत के नीचे रहती थीं और आपसी प्रेम ही उनकी पूंजी होती थी। कितनी भी निर्धनता क्यों न हो, यदि परिवार में प्रेम की पूंजी है तो भूखे रहना या याचना करना जैसे चिन्ताजनक हालात कभी आ नहीं सकते। चिन्ताग्रस्त अर्थात् विनाशी धन व मोहकारक रिश्तों में फंसना। बेफिक्र अर्थात् अविनाशी शान्ति व एक ईश्वरीय सम्बन्ध में रमना। चिन्ताग्रस्त मनुष्य के जीवन में जो महत्व सोने की चैन (Golden Chain) का होता है, बेफिक्र के जीवन में वही महत्व चैन से सोने (Pleasant Sleep) का होता है। ज्यादा पैसा इन्सान को चिन्ता में रखकर समय से पहले ऊपर भेज सकता है लेकिन इन्सान पैसे को ऊपर नहीं ले जा सकता। चिन्ताग्रस्त, चिन्ता में रहने का आदी हो जाता है, तो बेफिक्र मनुष्य ज्ञानयुक्त चिन्तन में जीने का आदी हो जाता है।

**(क्रमश:)**

# एक पत्र, पुत्र के नाम

ब्रह्माकुमारी ललिता, विकासपुरी, नई दिल्ली

**प्रिय पुत्र,**

आज मेरे जीवन का सबसे खूबसूरत दिन था। आज तुम अपनी पहली तनख्वाह लाये। कितने प्रसन्न थे तुम। तुम्हारे चेहरे की चमक ने मेरे बूढ़े चेहरे की झुर्रियों में अनगिनत इंद्रधनुषी रंग भर डाले।

याद है, कितनी मन्नतें माँगी थी, कितनी रातें हम दोनों ने मिलकर जागते बितायीं थीं; तुम रात-रात भर पढ़ते रहते और मैं बेबस-सी बस तुम्हें बार-बार देखने आ जाती थी। कितना झिल्लाते थे तुम! तुम्हारे ज्यादातर दोस्तों की नौकरियाँ लग गई थीं। लोग हमसे कटने लग गए थे। कहीं न कहीं शायद हम दोनों ही लोगों से कन्नी काटने लगे थे। याद है, सुरेश ने हमें अपनी शादी का कार्ड भी नहीं दिया था। मुझे मालूम है, वो तुम्हारी हँसी आँसुओं के फाहे से भीगी पड़ी थी। जानती हूँ, तुमने भी मेरी गीली आँखों की नमी अपने कोमल दिल पर ओस की बूँद की तरह महसूस की होगी। तुमने ज्यादा नमक वाले खाने पर चिल्लाना बन्द कर दिया था और मैंने भी तुम्हें वॉट्स एप्प पर प्रेरणादायक मैसेज भेजने कम कर दिए थे। हमने एक-दूसरे से कभी इन सबका कारण नहीं पूछा। बस दुआओं, प्रार्थनाओं का पुल-सा हम दोनों के बीच बनता चला गया। शब्द कम हो गए और दुआएँ बोलने लगीं।

तुम्हारी परीक्षा का परिणाम आया और मैंने तुम्हें खुश होने की अनुमति भी नहीं दी। इससे पहले भी कई बार तुमने लिखित परीक्षा पास कर ली थी लेकिन कभी मेडिकल, कभी आरक्षण...कभी कुछ, कभी कुछ और कभी कुछ। अपनी मंजिल तक आते-आते कैसे तुम पीछे धकेल दिए जाते रहे। तुम्हारा वो क्रंदन...आज भी मेरी सांसें घोटता है।

तुम्हारी असफलताओं ने तुम्हें अनुशासित तरीके से पढ़ना सिखाया; खुद पर, सिर्फ खुद पर विश्वास करना सिखाया। तुम कमजोरी में भी मजबूत होते चले गए। तुम्हें पता नहीं, तुम्हारे उस आत्मविश्वास पर मैं बहुत गर्व महसूस करती थी। तुम्हारा ज्ञान, जागरूकता चरम सीमा पर पहुँच रही थी। कई बार तुम ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग करते कि मेरा सिर ऊँचा हो उठता कि मैंने वे कभी सुने भी नहीं थे। कितनी गहराई से तुमने हर विषय को पकड़ लिया था। कितनी सहजता से तुम के.बी.सी.के बहुत-से प्रश्नों के उत्तर दे देते थे। रोमांचित अनुभव कर रही हूँ आज उन यादों के समंदर में गोते लगाते हुए। तुम्हारी मेहनत, तुम्हारे चेहरे का रंग बदल रही थी और याद है, मैं भी सारा दिन जाप करने की बजाए मुस्कराने लगी थी। अब मेरे सजदे में प्रार्थना नहीं, शुकराना था, सिर्फ शुकराना। तुम्हारी मेहनत ने मेरी अर्जी ईश्वर के दरबार में स्वीकृत करवा दी। फाइनल लिस्ट में तुम्हारा नाम देख मेरी खुशी की कोई सीमा नहीं थी। सब बेड़ियों से स्वतंत्र। उन्मुक्त आकाश में मेरा नन्हा-सा दिल ऊँची-ऊँची उड़ानें भर रहा था।

आज तुम्हारी तनख्वाह का चेक देख कर लगा कि अभी भी खुशी अधूरी है। आज भी तुम्हें नाचने-कूदने का अधिकार नहीं, बेटा। अभी तो तुम सीढ़ी चढ़ मैदान में पहुँचे हो। तुम्हारी वास्तविक परीक्षा तो अब आरंभ हुई है। अपने अनुशासन, ईमानदारी, समर्पण, तपस्या के सबक को भूलना नहीं। इन नैतिक मूल्यों की नींव को कमजोर मत होने देना। माया की कितनी भी आँधियाँ आयें, तुम अडिग रहना। कोई भी लालच तुम्हें विचलित न कर पाए। कर्म ऐसा हो कि तुम्हें, तुम्हारे बाद भी याद किया जाए। उदाहरण बनना मेरे बच्चे। कीचड़ में कमल की भाँति अपनी खूबसूरती की महक फैलाते रहना। याद रखना, पैसे की चमक मृगतृष्णा है। नजर तो आती है लेकिन है नहीं। अपने उत्तरदायित्व ऐसे निभाना कि रात को हल्के दिल से, मीठी नींद सो सको। पैसा सिर्फ दवाइयों का प्रबंध करता है, स्वास्थ्य की नेमत संतुष्टि से आती है। तुम्हें किसी भी चमकीली चीज के पीछे भागना नहीं है। पीछे भागने वाला, पीछे ही रहता है। तुम जमीन पर सख्त कदम गड़ा कर, सतर्कता से दाएँ-बाएँ देखते हुए चलना। चमकीली आँधियाँ कहीं तुम्हारी आँखें न चुँधियाँ दें। सावधान!! इन आँधियों में बहुत-से तहस-नहस हो गए। मेरे बेटे, सहनशीलता और विवेक की ढाल से सदैव खुद को बचाये रखना है। मुझे आशा है कि तुम अपनी हर परीक्षा में सफल होंगे और अपनी माँ का नाम भी रोशन करोगे। एक सपूत जाने कितनी नस्लों पर लगे पुराने कलंक धो डालता है। ऐसा ही सपूत बनने की आशा तुम्हारी माँ तुमसे लगाए बैठी है।

**तुम्हारी माँ** ■■■

# प्रश्न - उत्तर...

राहुल सेठी, लुधियाना (पंजाब)

**प्रश्न: बच्चों में धैर्य का विकास कैसे करें?**

उत्तर: धैर्य, सन्तुष्टता, सहनशीलता, अंतर्मुखता आदि-आदि सभी दिव्य गुण हैं। इन दिव्य गुणों की धारणा ही जीवन का लक्ष्य है। ये गुण रोज हमारे जीवन में काम आते हैं। जैसे दीवार, ईंटों से बनती है, मगर एक ईंट को दीवार नहीं कह सकते। उसी तरह एक-एक गुण धारण करते-करते जीवन गुणमूर्त बनता है लेकिन केवल एक दिन की धारणा से जीवन को गुणमूर्त नहीं बना सकते।

जब भी हम कोई कर्म करते हैं तो उसके फल की इच्छा तो करते ही हैं लेकिन कर्म फिलोसोफी में कहीं भी यह नहीं लिखा कि कर्म का फल तुरंत मिल जायेगा। हाँ, यह भी तय है कि जब भी हम अच्छा कर्म करते हैं तो उसी समय हमें खुशी का अनुभव तो होता ही है और कोई बुरा कर्म करते हैं तो हमें ग्लानि का अनुभव भी होता ही है। अगर हम ये ही समझ लें तो भी हम धैर्यवान हो सकते हैं। आज हम उस जमाने में रह रहे हैं जहां पिज़्ज़ा तो 30 मिनट में आता है और वेट लॉस भी हमें 30 मिनट में ही चाहिए।

बच्चों को धैर्य की शिक्षा शब्दों से नहीं दी जा सकती, वो हमें देख के ही सीखेंगे। वो हमारा ही अनुकरण करेंगे। विपरीत परिस्थितियों में जैसा हमारा रिएक्शन होगा, बिल्कुल वैसा ही रिएक्शन वो भी करेंगे। एक ईश्वरीय महावाक्य है, गुण अपने आप नहीं आते, उन्हें धारण करना पड़ता है और विकार अपने आप आ जाते हैं उन्हें छोड़ना पड़ता है। जैसे घर के बाहर अगर कोई खाली स्थान है, उसमें कुछ न किया जाए तो खरपतवार (विकार) उग जाती है और अगर उसी खाली प्लाट को हमने लॉन (गुण) बनाना है तो हमें मेहनत करनी होगी।

धैर्य के लिए दूसरी मुख्य बात है दृढ़ता। यह दिव्य गुणों का आधार स्तंभ है। अगर हममें किसी काम को करने की दृढ़ता ही नहीं होगी तो कोई गुण टिकेगा नहीं। हम किसी भी कार्य को करने लगें तो अंगद की तरह दृढ़ हो कर करें। यह नहीं कि आज कर लिया, फिर सोचा, परिणाम तो आ ही नहीं रहा, छोड़ो जी, कुछ और करते हैं। अस्थिर मन वाला मनुष्य ना तो खुद धैर्यवान हो सकता है, ना अपने बच्चों को धैर्यवान बना सकता है। हमें यह भी सीखना है कि किन बातों को समय पर छोड़ना है और किन बातों पर तुरंत कार्य करना है, तभी हममें धैर्य का गुण निखर कर आएगा। एक बार एक आदमी ने मूर्ति बनाई लेकिन उसकी नाक थोड़ी लंबी बन गयी। उसके मित्र ने कहा कि इसे ठीक कर दो। तो उसने कहा, मैं तुम्हारी तरह जल्दबाजी में नहीं रहता, ये नाक ऐसे ही रहेगी, कुछ सौ सालों बाद हवाओं की घिसावट से अपने आप ठीक हो जाएगी। क्या इसे धैर्य कहेंगे? आलस्य या लापरवाही या कामचोरी या टालमटोल – इन्हें धैर्य का जामा न पहनाएं। धैर्य अर्थात् अनुकूलता की प्रतीक्षा करते हुए भी अन्दर से उमंग में, कर्मठता में बने रहना। हाथ पर हाथ धरे बैठने और धीरज धरने में बहुत फर्क है। ■■■


**सदस्यता शुल्क:**

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

**शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :**

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

**For Online Subscription:** **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
**Branch Name** : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

**Mobile:** 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

**मुख्य सम्पादक** - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

**फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :**

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

**महेसाना-** विश्व पर्यावरण दिवस कार्यक्रम में नगरपालिका की प्रमुख वर्षा बहन अपने विचार रखते हुए। मंचासीन हैं ब.कु. सरला बहन, फोरेस्ट ओफिसर किंजल बहन, अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता प्रदीप सिंह राठौड़, गणपत युनिवर्सिटी, खेरवा-महेसाणा के फार्म मेनेजर अश्विन भाई, ब.कु. वर्षा बहन व अन्य।

**रीवा-** विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन हैं ब.कु. निर्मला बहन, जिला कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक, भारतीय रेड क्रॉस सोसाइटी के वाइस चेयरमैन हाजी ए.के. खान, युवा समाजसेवी भ्राता अविराज चौथवानी, कविवर भ्राता रामसुंदर द्विवेदी तथा ब.कु. नम्रता बहन।

**बहल-** विश्व पर्यावरण दिवस पर दैनिक जागरण द्वारा आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में हवन में आहुति डालते हुए महंत विकास गिरि, मौलवी अब्दुला साद, आर्य समाज प्रधान डॉ. एन.पी. गौड़, युवा एकता मण्डल के प्रधान भ्राता योगेश शर्मा, गौसेवक भ्राता सुरेश पातवानियाँ, भ्राता अमरजीत चौधरी, ब.कु. शकुन्तला बहन तथा ब.कु. पूनम बहन।

**रतलाम (डोंगरे नगर)-** विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए जिला वनमंडल अधिकारी भ्राता ध्यानचन्द्र डोडवे, भ्राता एस. परमार जी, ब.कु. सविता बहन, ब.कु. गीता बहन तथा अन्य।

**भीलवाड़ा-** पथिक नगर सेवाकेंद्र पर पीपल का पौधारोपण करते हुए पार्षद बहन मधु शर्मा, समाजसेवी भ्राता लादूराम जी, ब.कु. तारा बहन, लायंस क्लब सीईओ बहन उषा अग्रवाल, ब.कु. इंद्रा बहन व अन्य।

**कोरापुट-** विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण करते हुए फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर भ्राता रोहित शर्मा, ब.कु. स्वर्णा बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2021-2023 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road) Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2021-2023. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : July, 2021.

राजयोगिनी दीदी मनमोहिनी जी

38वीं पुण्यतिथि (28 जुलाई,2021)

If undelivered, please return to Gyanamrit Bhawan, Shantivan, Abu Road, Sirohi-307510